A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 09 जून, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 232 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

शादी...

आमतौर पर शादी में दूल्हे का बनोला या प्रोसेशन निकाला जाता है। मालवा के गावों में लड़कियों की बनोली (प्रोसेशन) घोड़े पर बिठा कर निकालने की परम्परा है। मंदसौर जिले के एक गांव में लिया गया है यह फोटो।

फोटो: बंसीलाल परमार

तीसरी बार पीएम पद की शपथ लेंगे नरेन्द्र मोदी, समारोह आज

सुरक्षा में पैरामिलिट्री की 5 कंपनियां तैनात, 500 सीसीटीवी से निगरानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी 9 जून 2024 की शाम 7.15 बजे लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे। मोदी के साथ एनडीए के 14 सहयोगी दलों के 18 सांसद भी मंत्री पद की शपथ ले सकते हैं। इनमें 7 कैबिनेट और बाकी 11 स्वतंत्र प्रभार और राज्यमंत्री के रूप में शपथ ले सकते हैं। हालांकि, इसकी आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है। माना जा रहा है 3 दर्जन से अधिक सांसद मंत्री पद की शपथ ले सकते हैं। टीडीपी और जेडीयू से 2-2 और शिवसेना से एक कैबिनेट मंत्री बन सकते हैं। सूत्रों का कहना है कि इसके अलावा एनसीपी, एलजेपी और जेडीएस के कोटे से कैबिनेट मंत्री शपथ ले सकते हैं। जेडीयू नेता केसी त्यागी ने दावा किया कि, नीतिश कुमार को इंडिया ब्लॉक से पीएम बनाने का ऑफर मिला था। मगर उन्होंने ठुकरा दिया क्योंकि अब पीछे देखने का सवाल ही नहीं है। उधर अमित शाह और जेपी नड्डा मोदी आवास पहुंचे। यहां मंत्रिमंडल को लेकर चर्चा हो सकती है। टीडीपी के एक सांसद ने बताया कि किस दल से कितने मंत्री बनाए जाएंगे, इसका फॉर्मूला पहले ही तय किया जा चुका है। इसको लेकर सार्वजनिक रूप से किसी तरह की चर्चा

करने की कोई जरूरत नहीं है। सभी इस बात पर सहमत हैं कि पीएम जिसे जो जिम्मेदारी देंगे, वे उसे निभाएंगे। जेडीयू सांसद लवली आनंद ने रेलवे मंत्रालय के सवाल पर कहा, बिल्कुल (जदयू को) मिलना चाहिए। पहले भी ऐसा ही था।

सीडब्ल्यूसी की बैठक में राहुल की जय जयकार

- लोकसभा में नेता विपक्ष बनाने की मांग, प्रस्ताव भी पास,सोनिया गांधी सर्वसम्मति से कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष चुनी गईं

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के नतीजों से कांग्रेस पार्टी उत्साहित है। नतीजों के चार दिन बाद ही दिल्ली के अशोका होटल में

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने की। मीटिंग में राहुल गांधी को विपक्ष का नेता बनाने की मांग की गई है। इसके लिए प्रस्ताव भी पास किया गया है। हालांकि राहुल गांधी ने इस प्रस्ताव पर सोच विचार के लिए समय मांगा है। वहीं बैठक में मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि जहां जहां से राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा और भारत जोड़ो न्याय यात्रा गुजरी, वहां-वहां पार्टी की सीटें बढ़ी है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में राहुल गांधी, सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी समेत कांग्रेस के कई बड़े नेता शामिल हुए। वहीं सोनिया गांधी सर्वसम्मति से कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष चुनी गईं।

ओडिशा में शपथ के लिए एमपी के नेताओं को जिम्मा

- मंत्री विश्वास सारंग, सांसद आलोक शर्मा और प्रदेश मंत्री लोकेंद्र पारासर को भेजा

भोपाल (नप्र)। ओडिशा विधानसभा चुनाव में जीत हासिल करने के बाद मंत्रिमंडल गठन में जुटे भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने एमपी के 3 बीजेपी नेताओं को शपथ की तैयारियों का जिम्मा सौंपा है। मोहन सरकार में मंत्री विश्वास सारंग, भोपाल के नव निर्वाचित सांसद व बीजेपी के प्रदेश उपाध्यक्ष आलोक शर्मा तथा बीजेपी के प्रदेश मंत्री लोकेंद्र पाराशर को केंद्रीय संगठन ने ओडिशा पहुंचने के लिए कहा है। तीनों ही नेता अलग-अलग स्थानों से ओडिशा के लिए रवाना हो गए।

मंत्री विश्वास सारंग इंदौर में सूचना मिलने के बाद ओडिशा के लिए रवाना हुए जबकि आलोक शर्मा दिल्ली में थे और वहीं से ओडिशा जा रहे हैं। वहीं बीजेपी के पूर्व प्रदेश मीडिया प्रभारी व वर्तमान में प्रदेश मंत्री लोकेंद्र पाराशर भोपाल से ओडिशा के लिए रवाना हुए हैं। ये तीनों ही आज रात में ओडिशा पहुंचकर केंद्र के निर्देशों के मुताबिक शपथ की तैयारियों का काम कराएंगे, और केंद्रीय नेतृत्व को रिपोर्ट करेंगे।

ओडिसा में इस बार बीजेपी को 147 सीट वाली ओडिशा विधानसभा में 78 सीट पर जीत मिली है। बीजेपी यहां पहली बार सरकार बनाने जा रही है। भाजपा ने जीत के बाद 5 बार के मुख्यमंत्री रहे नवीन पटनायक को सत्ता से बाहर किया है।

सुप्रभात

एक बाज़ी बिछी हुई है
शतरंज की
जमे हुए हैं मोहरे
काले भी सफ़ेद भी
सलामत हैं बादशाह
इधर भी उधर भी
काले भी सफ़ेद भी
हक़ दिया गया है
प्यादों को
कि वे चल सकते हैं
सबसे आगे
चाल पहली
बस बताया नहीं गया
प्यादों को
कि पीटे भी जाएंगे वे
पहले पहल
मारे भी जाएंगे वे
सबसे पहले
हाथी जो ठहरे
सवारी शाही
वे चल सकते हैं सीधे
सीधी सपाट राजमार्ग
जैसी राहों पर
लेकिन जिनके चेहरे बिगड़ गए हैं धूप में
और मेहनत के कूबड़ उबर आए हैं
जिनकी पीठ पर
उन ऊंटों को चलना होगा
बचते-बचते
तिरछे-तिरछे
और घोड़े तो ठहरे नौजवान
वे किसी को भी लांघकर
कूद सकते हैं घर ढाई
पर ये कूदते लांघते घोड़े नौजवान
होंगे शहीद ताकि
रहें सलामत बादशाह
इधर भी उधर भी
काले भी सफ़ेद भी
लेकिन असल हक़ जैसा हक़ तो
हासिल है वज़ीरों को
जो चल सकते हैं
सीधे तिरछे
आगे पीछे कैसे भी
हक़ वज़ीर का नाहक नहीं है
वजीरों की चालों पर
होती है टिकी
सलामती बादशाहों की
इसलिए चल रहे हैं वज़ीर
पीटते हुए प्यादों को
बेदखल करते हुए हाथियों को
गिराते हुए ऊंटों को
और शहीद करते हुए
घोड़े नौजवानों को
ताकि जमी रहे बाज़ी
सलामत रहें बादशाह
इधर भी उधर भी
काले भी सफ़ेद भी
जी
बस
सलामत रहें बादशाह
इधर भी उधर भी
काले भी सफ़ेद भी।

- अशोक जमनानी

महाराष्ट्र में बारिश-बिजली से एक हफ्ते में 8 की मौत

राजस्थान में तूफान से 4 की जान गई, आज भी रफ्तार से चलेंगी हवाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के दक्षिणी राज्यों को कवर करने के बाद महाराष्ट्र में शुक्रवार (7 जून) को मानसून की एंट्री हुई।

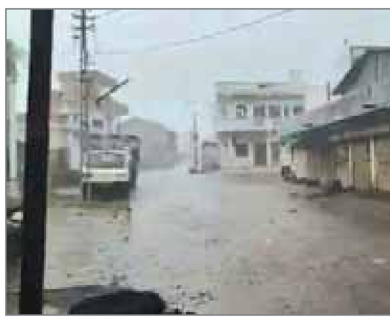

इसके 9 से 10 जून के बीच मुंबई पहुंचने की संभावना है। मौसम विभाग ने शनिवार (8 जून) को महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक और केरल के तटीय इलाकों में भारी बारिश की चेतावनी दी है। गोवा में अगले चार दिन तक मछुआरों को समुद्र में न जाने की चेतावनी दी गई है। केरल के कालीकट एयरपोर्ट पर खराब मौसम के कारण शनिवार सुबह दुबई से आ रही एयर इंडिया एक्सप्रेस की एक फ्लाइट को कोच्चि डायवर्ट कर दिया गया। एयरलाइन सूत्रों ने बताया कि 173 यात्रियों के साथ एआई एक्सप्रेस की फ्लाइट सुबह 2.47 बजे कोच्चि एयरपोर्ट पर उतरी। करीब सात घंटे बाद सुबह करीब 9.30 बजे फ्लाइट कोच्चि से कालीकट रवाना हुई। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा में पिछले एक हफ्ते से बारिश के कारण आई बाढ़ और बिजली गिरने से 8 लोगों की मौत हो गई है। इनमें से 6 की मौत बिजली गिरने से हुई है। मराठवाड़ा में 113 जानवरों की मौत की भी सूचना है।

पड़ोसी राज्यों से जुड़े बड़े प्रोजेक्ट्स को लेकर करेंगे बैठक

नर्मदा का नहीं शिप्रा का पानी ही मिलेगा लोगों को: सीएम यादव

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 9 जून को दिल्ली में होने वाले पीएम नरेंद्र मोदी के शपथ समारोह में शामिल रहूंगा। साथ ही मंत्रिमंडल के सहयोगी, जन प्रतिनिधि और कार्यकर्ता बड़ी संख्या में मौजूद रहेंगे। उन्होंने कहा- राजस्थान, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र समेत सभी सीमावर्ती राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ जल्द अलग-अलग बैठकें कर राज्यों के सहयोग से पूरे किए जाने वाले प्रोजेक्ट्स को पूरा कराने का काम किया जाएगा। इसके लिए जल्दी ही बैठकों का दौर शुरू होगा।

नर्मदा का नहीं शिप्रा का पानी ही मिलेगा लोगों को- मुख्यमंत्री ने कहा- शिप्रा जहां से निकलती हैं वह इंदौर का छोटा गांव है। शिवराज सरकार में नदी जोड़ो अभियान के अंतर्गत जल प्रवाह बनाए रखा गया है। लोगों की मांग है कि शिप्रा में शिप्रा का पानी चाहिए। सेवरखेड़ी के पास देवास और उज्जैन के बीच एक नया स्थान चयन किया है। इसमें 6 सौ करोड़ रुपए का खर्च

आएगा।

कान्ह नदी का पानी शिप्रा में मिलता है। कान्ह नदी इंदौर से निकलती है। इंदौर के सीवर का पानी उज्जैन में आता है। इसके बचाव के लिए 700 करोड़ का टेंडर कर कान्ह नदी के पानी को साफ करने के लिए कहा है। इसके बाद यह पानी पाइप से आएगा, लेकिन इसके बाद भी यह कोशिश होगी कि यह पानी शिप्रा में न मिले क्योंकि साधु संत और अन्य लोग शिप्रा के पानी का आचमन करते हैं।

जल संवर्धन अभियान के तहत भी सरकार तेजी से कम कर रही - मुख्यमंत्री ने कहा कि जल संवर्धन अभियान के तहत भी सरकार तेजी से कम कर रही है। प्रदेश में 16 जून गंगा दशहरा तक एक अभियान चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत प्रदेश में साढ़े 5 करोड़ पौधे रोपे जाएंगे। नदी, बावड़ी और कुओं के संवर्धन और निर्माण की दिशा में काम किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि जल संवर्धन अभियान के अंतर्गत 9 जून को नेमावर में होने वाले कार्यक्रम में शामिल होंगे। 11 जून को रीवा, 12 जून को जानापाव जहां पांच नदियां निकलती हैं, वहां कार्यक्रम होगा। 13 जून को नर्मदापुरम, 14 जून को सागर, 15 जून को ग्वालियर और 16 को गंगा दशहरे के दिन इसका समापन उज्जैन में होगा।

भोपाल में पेड़ काटे जाने का निर्णय नहीं- भोपाल में मंत्रियों के बंगलों के लिए पौधे काटे जाने के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा प्रोजेक्ट तो रोज बनते हैं पर उसे देख कर ही मंजूरी दी जाती है। अभी इस मामले में अंतिम निर्णय नहीं हुआ है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 42.9 °c

न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 09 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

जल्द ही मोबाइल नंबर बदलने जा रही सरकार !

- 21 साल बाद लिया फैसला, फोन करने पर दिखेंगे 10 से ज्यादा नंबर

नंबरों का आंकड़ा 10 से बढ़ाकर 11 से 13 तक किया जा सकता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। टेलीकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया (ट्राई) समय के साथ बड़े फैसले लेती रही है। अब एक और फैसला लिया गया है। 5 जी नेटवर्क आने के बाद मोबाइल नंबरिंग में लगातार परेशानी हो रही है। यही वजह है कि अब इसको लेकर एक जमीन तैयार की गई है। यही वजह है कि ट्राई ने नेशनल नंबरिंग प्लान को रिवाइस करने का फैसला किया है। इससे पहले साल 2003 में भी ऐसा ही फैसला लिया गया था। सब्सक्राइबर्स की बढ़ती संख्या की वजह से मोबाइल कंपनियों के लिए नया चैलेंज खड़ा हो गया है। सर्विस भी लगातार बढ़ रही हैं तो इसके लिए अलग से नंबरिंग लाने पर विचार किया जा रहा है। नेशनल नंबरिंग प्लान की मदद से टेलीकम्युनिकेशन आइडेंटिफायर की पहचान की जाती है और ये अहम भूमिका निभाते हैं। अब लगातार मोबाइल यूजर्स की संख्या बढ़ती जा रही है। देशभर में 750 मिलियन टेलीफोन कनेक्शन के लिए साल 2003 में नंबरिंग रिसोर्स एलोकेट किया गया था। जबकि 21 साल बाद, नंबरिंग रिसोर्स रिस्क के दायरे में आ गया है। क्योंकि नेटवर्क प्रोवाइडर्स की तरफ से सर्विस में भी लगातार बदलाव किया गजा रहा है और इसकी वजह से नंबर ऑफ कनेक्शन की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। भारत में टेलीफोन सब्सक्राइबर्स की संख्या भी लगातार बदलती जा रही है और 31 मार्च तक ये करीब 85 प्रतिशत तक बढ़ गई है। ट्राई ने इसको लेकर अपनी वेबसाइट को भी अपडेट कर दिया है और सभी से इसको लेकर सलाह मांगी है। क्योंकि लंबे समय बाद नेशनल नंबरिंग प्लान में बदलाव किया जा रहा है। लिखित में भी इस पर सलाह दी जा सकती है। एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अब मोबाइल नंबर की संख्या 10 से बढ़ा दी जा सकती है। इसे 11 से लेकर 13 नंबर तक किया जा सकता है जो यूजर्स की पहचान करने में अहम मदद कर सकती है।

संक्षिप्त समाचार

मणिपुर में फिर हिंसा, घर छोड़कर भागे 200 मैतेई

जिरिबाम में कोहराम, कुछ जंगलों में छिपने को मजबूर

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के जिरिबाम जिले में गुरुवार शाम को मैतेई बुजुर्ग की हत्या के विरोध में इलाके में हिंसा भड़क गई है। मृतक की पहचान 59 साल के सोइबाम सरतकुमार सिंह के तौर पर हुई है। वह गुरुवार सुबह अपने खेत के लिए निकले थे, बाद में उनकी डेडबॉडी मिली जिस पर किसी धारदार हथियार से घाव किए गए थे। इस घटना के बाद गुस्साए गांववालों ने जिरिबाम पुलिस स्टेशन के सामने विरोध प्रदर्शन किया और कहा कि चुनाव से पहले

उनसे जो लाइसेंस वाले हथियार लिए गए थे, वे उन्हें लौटा दिए जाएं। जिले में कर्फ्यू लगा दिया गया है। मणिपुर पुलिस ने इंफाल में मौजूद स्टेट पुलिस कमांडो अधिकारियों को शनिवार को जिरिबाम पहुंचने का निर्देश दिया है। हिंसा के चलते 200 से ज्यादा मैतेई लोगों को घरों से निकाल कर सुरक्षित जगहों पर भेजा गया है। कई गांव वाले अब जिरि स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में रह रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक गांव वाले घरों को उग्रवादियों ने जला दिया था।

चंद्रबाबू परिवार की संपत्ति 5 दिन में 858 करोड़ बढ़ी

- 35.71 फीसदी हिस्सेदारी वाले हेरिटेज फूड्स के शेयर 55 फीसदी चढ़े

नई दिल्ली (एजेंसी)। चंद्रबाबू नायडू परिवार की संपत्ति पिछले 5 दिनों में ही 858 करोड़ रुपए बढ़ी है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार हेरिटेज फूड्स के शेयरों में इस दौरान 55 फीसदी का उछाल आने से ऐसा हुआ है। हेरिटेज फूड्स के प्रमोटर पार्टी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू के बेटे नोरा लोकेश हैं। चंद्रबाबू नायडू 12 जून को आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। हेरिटेज ग्रुप की स्थापना 1992 में चंद्रबाबू नायडू ने की

थी। यह कंपनी डेयरी, रिटेल और एग्री सेगमेंट में काम करती है। हाल ही में हुए आंध्र प्रदेश विधानसभा और लोकसभा चुनावों में तेलुगु देशम पार्टी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू का शानदार प्रदर्शन रहा है। इससे उनकी कंपनी पर निवेशकों का भरोसा बढ़ा है। चंद्रबाबू नायडू की पत्नी भुवनेश्वरी के पास कंपनी में 24.37 फीसदी हिस्सेदारी है। जबकि बेटे लोकेश और बहू ब्राह्मणी के पास 10.82 फीसदी और 0.46 फीसदी हिस्सेदारी है। नायडू के पोते देवांश के पास इसमें 0.06 फीसदी हिस्सेदारी है।

एमपी को मिल सकते हैं चार मंत्री

शिवराज के अलावा दो नए चेहरों को मिल सकता है मौका ; रात में कुलस्ते से मिले सीएम

भोपाल (नप्र)। नरेंद्र मोदी 9 जून को तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे। पीएम की शपथ से पहले मंत्रिमंडल को लेकर मंथन चल रहा है। देश में बीजेपी के कई मजबूत राज्यों में हार हुई, लेकिन एमपी में पहली बार रिकॉर्ड सभी 29 सीटों पर बीजेपी ने जीत दर्ज की। इस जीत के बाद सबकी निगाहें इस पर टिकी हैं कि एमपी से कितने मंत्री बनाए जाएंगे।

सूत्रों का कहना है कि मंत्रिमंडल का फॉर्मूला तैयार हो गया है। एमपी को चार मंत्री मिल सकते हैं। मौजूदा मंत्रियों में सिर्फ ज्योतिरादित्य सिंधिया को रिपीट किया जा सकता है। सूत्रों के अनुसार पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान और वर्तमान में नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को मोदी 3.0 में कैबिनेट में मंत्री बनाया जा सकता है। एनडीए के

घटक दल टीडीपी और जेडीयू ने कृषि मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय की मांग की है। अब ऐसे में शिवराज को कौन सा मंत्रालय मिलेगा, इस पर फैसला नहीं हुआ है। मोदी के तीसरे कार्यकाल में सिंधिया दूसरी बार मंत्री बनेंगे। उनके मंत्रालय पर भी अभी फैसला होना है।

कुलस्ते और खटीक का पत्ता कट सकता है- इस बार बीजेपी बहुमत के आंकड़े को हासिल करने से चूक गई। पहला मौका है जब मोदी एनडीए के सहयोगी दलों के साथ सरकार बनाएंगे। ऐसे में सरकार में शामिल दलों को साधने के लिए मंत्रिमंडल में जगह देनी होगी।

हिमाद्री, महेन्द्र को मिल सकता है मौका

29 लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज करने के बाद बीजेपी एमपी के जातीय संतुलन का भी ध्यान रखेगी। एमपी की करीब 22 फीसदी आदिवासी वर्ग को साधे रखने के लिए शहडोल से दूसरी बार की सांसद हिमाद्री सिंह को राज्यमंत्री बनाया जा सकता है। वहीं, दलित चेहरों में डॉ. वीरेंद्र कुमार खटीक की जगह देवास सांसद महेंद्र सिंह सोलंकी को जगह मिल सकती है। सोलंकी भी दूसरी बार चुनाव जीते हैं। पॉलिटिकल एक्सपर्ट कहते हैं कि मोदी सरकार का तीसरा कार्यकाल प्रयोग करने वाला नहीं, बल्कि एडजस्टमेंट वाला होगा। ऐसे में पहली बार के सांसदों को मंत्रिमंडल में जगह देने की संभावना कम है।

वीडी की भूमिका भी राष्ट्रीय राजनीति में अहम होगी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और खजुराहो से दूसरी बार साढ़े पांच लाख वोटों से चुनाव जीते वीडी शर्मा की भूमिका राष्ट्रीय राजनीति में अहम होगी। वीडी शर्मा के अध्यक्षीय कार्यकाल में एमपी के विधानसभा चुनाव में 163 सीटें बीजेपी ने जीतीं। लोकसभा चुनाव में सभी 29 लोकसभाओं पर जीत दर्ज की।

बीजेपी के केंद्रीय नेतृत्व द्वारा संगठन को तय किए गए टास्क को एमपी ने सबसे पहले पूरा किया है। एमपी के संगठन में कई नवाचार बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने किए हैं।

विधानसभा चुनाव के पहले एमपी से केंद्र में थे पांच मंत्री

विधानसभा चुनाव के पहले केंद्र सरकार में एमपी से पांच मंत्री थे। इनमें नरेंद्र सिंह तोमर, प्रहलाद पटेल, डॉ. वीरेन्द्र कुमार खटीक, ज्योतिरादित्य सिंधिया और फग्गन सिंह कुलस्ते थे। विधानसभा चुनाव में नरेंद्र सिंह तोमर और प्रहलाद पटेल को मुख्य चेहरा बनाकर उतारा गया। विधानसभा चुनाव परिणाम आने के बाद तोमर को विधानसभा अध्यक्ष और प्रहलाद पटेल को पंचायत और श्रम मंत्री बनाया गया। वर्तमान में मोदी सरकार में एमपी से तीन मंत्री हैं।

महाराष्ट्र में मनोज जारंगे फिर से आमरण अनशन पर बैठ

- बोले-इस बार मराठा आरक्षण नहीं मिला तो विधानसभा चुनाव लड़ूंगा

मुंबई (एजेंसी)। मराठा आरक्षण की मांग का मुद्दा एक बार फिर उठ गया है। मराठा आरक्षण आंदोलन के नेता मनोज जरांगे फिर से आमरण अनशन पर बैठ गए हैं। उनका कहना है कि अगर इस बार मराठा आरक्षण नहीं मिला तो वे महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने कहा, अगर हमारी मांगे पूरी नहीं हुई तो हम आने वाले विधानसभा चुनाव में सभी 288 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेंगे। इसमें सभी जाति और धर्म के उम्मीदवार शामिल होंगे। तो इसकी जिम्मेदारी सरकार की होगी। उसके बाद, सरकार के पास बात करने के लिए कोई जगह नहीं होगी। मनोज जरांगे पाटिल जालना के अंतरवाली सैराट गांव में आमरण अनशन पर बैठे हैं। हालांकि, पुलिस ने उन्हें अनशन की इजाजत नहीं दी है। लोकसभा चुनाव से पहले भी दो बार (20-27 जनवरी और 10-26 फरवरी) मनोज जारंगे ने भूख हड़ताल की थी। तब महाराष्ट्र सरकार ने कुछ शर्ते मानकर अनशन खत्म करवा दिया था। अब तक 54 लाख लोगों के कुनबी होने का प्रमाण मिला है। उन सभी लोगों को कुनबी का कास्ट सर्टिफिकेट दिया जाएगा। जरांगे ने सरकार से 4 दिनों के भीतर सर्टिफिकेट देने की मांग की थी।

म.प्र.को मिली एक और महिला आईएएस

इटारसी एसडीएम प्रतीक से विवाह करने वाली अनीशा को केंद्र ने एमपी कैडर में भेजा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश को जल्द ही एक और महिला आईएएस अधिकारी मिलने वाली हैं। एजीएमयूटी में पदस्थ 2021 बैच की आईएएस अधिकारी अनीशा श्रीवास्तव को डिपार्टमेंट आफ पर्सनल एंड ट्रेनिंग ने एमपी कैडर आवंटित कर दिया है।

अनीशा को एमपी कैडर उनके विवाह के कारण मिला है। अनीशा ने एमपी कैडर के आईएएस टी प्रतीक राव के साथ विवाह किया है और इस कारण अनीशा को एमपी कैडर में भेजने के आदेश जारी किए गए हैं। आईएएस अनीशा के पति और आईएएस अधिकारी देवास में एसडीएम रहे हैं, और फिलहाल नर्मदापुरम जिले में एसडीएम इटारसी के रूप में पदस्थ हैं।

टी प्रतीक राव के पिता टी धर्माराव एमपी कैडर के आईएएस अफसर रहे हैं। 11 साल पहले वर्ष 2013 में एमपी कैडर के आईएएस धर्माराव और उनकी पत्नी विद्या धर्माराव का लेह लद्दाख में सड़क दुर्घटना में निधन हो गया था।

इसके बाद प्रतीक राव और उनके छोटे भाई ने माता-पिता की कमी के बीच पढ़ाई का संघर्ष पूरा किया। 2019 बैच के आईएएस प्रतीक राव ने

तीसरे अटेम्प्ट में सफलता पाई है और अब उनके साथ विवाह कर अनीशा श्रीवास्तव भी एमपी कैडर की आईएएस अधिकारी बन गई हैं।

आकाश त्रिपाठी एडिशनल सेक्रेट्री के लिए इम्पैनल- दूसरी ओर, मध्यप्रदेश के प्रमुख सचिव स्तर के अधिकारी और केंद्र में पदस्थ आकाश त्रिपाठी को केंद्र सरकार ने एडिशनल सेक्रेट्री और उसके समकक्ष पद के लिए इम्पैनल किया है। त्रिपाठी पिछले साल ही केंद्र में प्रतिनियुक्ति पर गए हैं। एमपी में त्रिपाठी ग्वालियर, इंदौर कलेक्टर के साथ विभिन्न विभागों में पदस्थ रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर में जल्द होंगे विधानसभा चुनाव

- ईसी ने दिए संकेत, पार्टी सिंबल के लिए मांगे गए आवेदन

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में जल्द विधानसभा चुनाव कराए जा सकते हैं। इलेक्शन कमीशन की ओर से इस तरह के संकेत मिले हैं। आयोग ने कहा कि उसने केंद्र शासित प्रदेश में चुनाव चिह्न के आवंटन के लिए पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त दलों से आवेदन तत्काल प्रभाव से स्वीकार करने का फैसला किया है। एक अधिकारी ने बताया कि इस बारे में चुनाव चिह्न (सुरक्षित अधिकार व आवंटन) आदेश, 1968 के पैरा 10 बी में जिक्र है। इसके तहत कोई भी रजिस्टर्ड गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल सदन का कार्यकाल समाप्त होने से 6 महीने पहले चुनाव चिह्न के लिए आवेदन कर सकता है। अधिकारी ने बताया कि जम्मू-कश्मीर में फिलहाल विधानसभा भंग है। इसलिए निर्वाचन आयोग ने एक बयान जारी कर चुनाव चिह्नों के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। उन्होंने कहा कि मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय दलों के पास अपने आरक्षित चिह्न होते हैं।

अब दिल्ली की राजनीति करेंगे अखिलेश यादव

- 36 सांसदों से मीटिंग के बाद किया ऐलान

विधानसभा सीट छोड़ने की शुरू की तैयारी

लखनऊ (एजेंसी)। कन्नौज से सांसद का चुनाव जीतने के बाद अखिलेश यादव ने अपनी विधानसभा करहल को छोड़ने का निर्णय लिया है। इसकी घोषणा उन्होंने सांसदों से मीटिंग के बाद शनिवार को लखनऊ में की। यानी, अब अखिलेश दिल्ली की राजनीति करेंगे। अखिलेश ने 2022 में मैनपुरी की करहल

विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा था। जीत के बाद आजमगढ़ के सांसद पद से उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। आजमगढ़ में उपचुनाव हुए, उसमें भाजपा के दिनेश लाल यादव निरहुआ ने जीत दर्ज की थी। अखिलेश ने सपा के सभी जीते हुए सांसदों को शनिवार को लखनऊ बुलाया। इसमें अखिलेश समेत 37 सांसद शामिल हुए। मीटिंग में मंथन के बाद उन्होंने विधानसभा सीट छोड़ने का ऐलान किया। अखिलेश ने कहा- पीडीए (पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक) की रणनीति की जीत होने से देश में नकारात्मक राजनीति खत्म हो गई।

पुतिन की सीक्रेट बेटियां अचानक आ गई सामने

पिता की राजनीतिक विरासत पर नजर, 9 साल का भाई भी दौड़ में

मॉस्को (एजेंसी)। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के परिवार को सार्वजनिक तौर पर बहुत कम देखा जाता है। उनकी दोनों बेटियों के बारे में भी लोग बहुत कम जानते हैं। इसीलिए उनको पुतिन की सीक्रेट बेटी भी कहा जाता है लेकिन अब चीजें बदल रही हैं। जनता की निगाहों से दूर रहने वाली पुतिन की बेटियां सार्वजनिक उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। व्लादिमीर पुतिन की दोनों बेटियों को हाल ही में रूस के अभिजात वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच पर देखा गया। इससे अनुमान लगाया जा रहा है कि यह पुतिन के बाद उनकी राजनीतिक विरासत को आसानी से ट्रांसफर की कोशिश है। द सन की

रिपोर्ट के मुताबिक, पुतिन की 37 साल की बेटी कतेरीना तिखोनोवा हाल ही में एक सार्वजनिक मंच पर थीं। उनकी बड़ी बहन मारिया वोरोत्सोवा भी इस कार्यक्रम में मौजूद थीं। पुतिन की बेटियों के सार्वजनिक रूप से सामने आने के बाद माना जा रहा है कि यह समाज में परिवार की जगह पक्की करने की एक भव्य योजना का हिस्सा हो सकता है। पुतिन की बेटी मारिया वोरोत्सोवा और कतेरीना तिखोनोवा उनकी पहली पत्नी ल्यूडमिला शक्रेबनेवा से हैं। दोनों का 2013 में तलाक हो गया था। अपने लंबे राजनीतिक करियर के दौरान पुतिन ने हमेशा अपने बच्चों को सुर्खियों से दूर रखा है। पुतिन की बेटी कतेरीना और मारिया गुरुवार और शुक्रवार को वे सेंट पीटर्सबर्ग इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम (एसपीआईईएफ) में वार्षिक व्यापार शिखर सम्मेलन में पैनल में शामिल हुई। इस कार्यक्रम को व्लादिमीर पुतिन ने भी संबोधित किया। पेशे से टेक्नॉलजी एक्जेक्यूटिव कतेरीना तिखोनोवा ने एक पैनल में रक्षा उद्योग द्वारा रूस की तकनीकी संप्रभुता को बढ़ावा देने पर अपनी बात भी रखी। दोनों बहनें अब धीरे-धीरे लोगों की नजरों में आ रही हैं।

रीवा में दो ट्रकों की आमने-सामने की भिड़ंत, 4 लोगों की मौत

रीवा (नप्र)। रीवा में शनिवार शाम दो ट्रकों की आमने-सामने भिड़ंत हो गई। हादसे में चार लोगों की मौत हो गई। घटना शाम 5:30 बजे चोरहटा थाना क्षेत्र में नेशनल हाइवे 30 पर हुई।जानकारी के मुताबिक एक ट्रक उत्तरप्रदेश के प्रयागराज से सतना की तरफ आ रहा था, जबकि दूसरा ट्रक रीवा से प्रयागराज की ओर जा रहा था। पुलिस और प्रशासन की टीम मौके पर पहुंच गई है। फिलहाल शवों को ट्रक से बाहर निकालने की कोशिश की जा रही है।

महाकाल को तीन लाख रुपए का रजत मुकुट अर्पित

उज्जैन (नप्र)। श्री महाकालेश्वर मंदिर में भगवान महाकाल के भक्त ने भगवान महाकालेश्वर को चांदी का मुकुट अर्पित किया है। चांदी के मुकुट का मूल्य आज के बाजार भाव से करीब तीन लाख रूपए बताया गया है। मंदिर समिति द्वारा दानदाता को भगवान महाकाल का प्रसाद व दुपट्टा भेंट कर सम्मान किया।श्री महाकालेश्वर मंदिर समिति के कोठार शाखा के प्रभारी मनीष पांचाल ने बताया कि श्री महाकालेश्वर मंदिर में शनिवार को भगवान महाकाल के भक्त दिलीप सत्यनारायण सोनी द्वारा पुरोहित नवनीत शर्मा व रूपम शर्मा की प्रेरणा से 1 नग चांदी का मुकुट मय कुंडल भगवान महाकाल को अर्पित किया।

परिक्रमा

लोकसभा चुनावः 'एनडीए' और 'इंडिया' दोनों बम-बम

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

भारत के जागरुक मतदाताओं की यही विशेषता है कि वह कभी-कभी ऐसा जनादेश देता है जिसमें जीतने वाले को छप्पर फाड़ बहुमत मिल जाता है और हारने वाले को हताशा और निराशा की वादियों में आत्मचिन्तन करने के लिए भेज देता है। लेकिन इस बार 2024 के आमचुनाव में देश के मतदाताओं ने ऐसा जनादेश दिया है जिसमें जीतने वाला तो बम-बम है ही, हारने वाले की भी खुशियां बरकरार हैं और वह भी बम-बम हो रहा है क्योंकि एक तो उसे अपनी उम्मीद से अधिक सफलता मिल गयी और दूसरे बहुमत से कुछ कदम ही पीछे रह गया है। देश के दो प्रमुख राजनीतिक गठबंधन इस चुनाव में आमने-सामने थे और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में एनडीए ने 295 सीटें जीतकर मोदी को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री की शपथ लेने वाला दूसरा नेता बना दिया है । अभी तक इस सूची में केवल पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु का नाम ही था अब उसमें मोदी का नाम शामिल हो गया है। इन चुनाव नतीजों में यह भी मजेदार बात रही कि नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाला एनडीए 400 पार के नारे के साथ चुनाव लड़ रहा था तो वहीं इंडिया गठबंधन के अधिकांश नेता 295 का लक्ष्य लेकर चल रहे थे लेकिन 295 के आंकड़े पर एनडीए रह गया जबकि इंडिया गठबंधन को 233 सीटें मिलीं। इंडिया गठबंधन इस बात को लेकर बम-बम है कि नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली भाजपा से वह कुछ कदम ही पीछे रहा है क्योंकि भाजपा को 240 सीटें मिली हैं जो कि 2019 के लोकसभा चुनाव से 63 कम हैं, जबकि इंडिया गठबंधन की अगुवाई कर रही कांग्रेस इसलिए बेहद खुश व आत्मविश्वास से भरी नजर आ रही है कि उसे 47 अतिरिक्त सीटों के साथ 99 सीटें प्राप्त हुई हैं। लेकिन अब कांग्रेस 99 के फेर से उबर चुकी है और उसे दो निर्दलियों का समर्थन मिल गया है।

नरेन्द्र मोदी रविवार 9 जून को शाम सवा सात बजे तीसरी बार प्रधान मंत्री के पद व गोपनीयता की शपथ ले लेंगे और इसके साथ ही उनकी तीसरी पारी आरंभ हो जायेगी। भाजपा के लिए संतोष की बात यह है कि एक तो उसकी सरकार बन रही है और दूसरे उसने अकेले जितनी सीटें जीती हैं उतना इंडिया गठबंधन मिलकर भी नहीं जीत पाया और उससे पांच-सात कदम पीछे रह गया। एनडीए सरकार की दो बड़ी बैसाखी चन्द्र बाबू नायडू और नीतीश कुमार हैं, दोनों ने मोदी के नेता चुने जाने पर अपनी-अपनी बात अपने-अपने ढंग से कही है। नायडू का कहना है कि मोदी राइट टाइम पर राइट लीडर हैं, हम एक हैं और तीन महीने से पीएम ने आराम नहीं किया है, लगातार उसी ऊर्जा से काम करते रहे हैं। आंध्र में उनकी रैलियों से बड़ा फर्क पड़ा है और हमने बड़े मार्जिन से चुनाव जीता है। मोदीजी की नीतियों से 2047 तक भारत ग्लोबल लीडर बनेगा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि मोदी जी जल्द ही काम आरंभ करें, हम उनका समर्थन करते हैं, अगली बार आप (मोदी) आइएगा न- तो इस बार हम देख रहे हैं कि इधर-उधर जो कुछ जीत गया है वह सब हारेगा, इस बार लोगों को जो मौका मिला है उन लोगों के लिए कोई गुंजाइश नहीं रहेगा वह सब खत्म हो जायेगा।

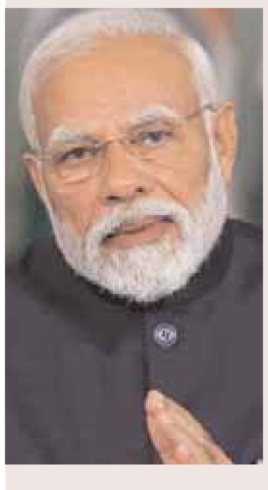

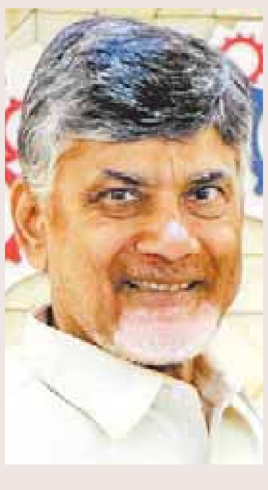

दूसरी ओर इंडिया गठबंधन भी सदन के अंदर और बाहर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराने का कोई भी अवसर अपने हाथ से नहीं जाने देगा। इंडिया गठबंधन की अगुवाई का सवाल है उसका चेहरा दलित नेता मल्लिकार्जुन खरगे ही बने रहेंगे ताकि अधिकांश मुद्दों पर सदन में विपक्ष एकजुट रह सके। राहुल गांधी आक्रामक भूमिका में आ गये हैं और उन्होंने निवृत्तमान सरकार के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह पर सीधे-सीधे आरोप लगाते हुए शेयर बाजार में उथल-पुथल को एक घोटाला निरुपित करते हुए जेपीसी से जांच कराने की मांग की है। नई सरकार के गठन से पहले ही राहुल गांधी ने शेयर बाजार में हुई भारी उथल-पुथल का मुद्दा उठाते हुए आरोप लगाया कि 4 जून को स्टॉक मार्केट में जिस तरह उतार-चढ़ाव हुआ वह सबसे बड़ा स्टॉक मार्केट घोटाला है और इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा गृहमंत्री अमित शाह सीधे तौर पर शामिल हैं। राहुल गांधी ने यह भी दावा किया कि मोदी व शाह को चुनाव नतीजों की असलियत मालूम थी, लेकिन मीडिया चैनलों पर झूठे एग्जिट पोल के सहारे शेयर बाजार घोटाले को अंजाम दिया गया। शेयर बाजार में भारी उथल-पुथल से आम निवेशकों के 30 लाख करोड रुपए । प्रधानमंत्री, वित्तमंत्री और गृहमंत्री की भूमिका की संयुक्त संसदीय समिति यानी जेपीसी से जांच कराई जाए । राहुल गांधी के राजनीतिक हमले का उत्तर देने केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल मैदान में आये और उन्होंने कहा कि राहुल गांधी अनाप-शनाप आरोप लगा रहे हैं। पिछले तीन-चार दिनों में भारतीय निवेशकों ने कमाई की है और दस वर्षों में मार्केट कैप 67 लाख करोड से बढ़कर 415 लाख करोड़ हो गया है।

और यह भी

राजनीति के भी अपने निराले रंग होते हैं। इस बार लोकसभा में बीजू जनता दल और मायावती की अगुवाई वाली बसपा की मौजूदगी नहीं रहेगी। बीजू जनता दल की पिछली लोकसभा में 12 सीटें थीं, इस बार उनके खाते में एक भी सीट नहीं आई। लेकिन क्षेत्रीय दलों में समाजवादी पार्टी की बल्ले-बल्ले हो गई और कांग्रेस के बाद वह इंडिया गठबंधन में 37 सीट पाकर दूसरे पायदान पर है, उसकी सीटों की संख्या में 32 की वृद्धि हुई है। लोकसभा चुनाव के परिणाम भाजपा के लिए चौंकाने वाले रहे क्योंकि उसके सहित किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। उत्तर प्रदेश में कभी दलितों की आवाज की पर्याय मानी जाने वाली बहुजन समाज पार्टी की राज्य में पकड़ कमजोर हो गई है और वह चुनाव में अपना खाता भी नहीं खोल पाई, उसका मत प्रतिशत 10 प्रतिशत से अधिक खोकर 9.39 प्रतिशत पर आकर टिक गया है। 2019 में उसने 10 सीटें जीती थीं और उसका मत प्रतिशत 19.43 था। बीजू जनता दल को विधानसभा चुनाव में भी 2009 के बाद पहली बार बहुमत नहीं मिला है। नवीन पटनायक जो 24 साल से उड़ीसा के मुख्यमंत्री थे उन्हें अब अपना पद छोड़ना पड़ रहा है। लोकसभा चुनाव में बीजद का वोट शेयर 2019 के वोट शेयर 43.32 प्रतिशत से गिरकर 37.53 प्रतिशत रह गया है। पिछले चुनाव में उसने 21 में से 12 सीटें जीती थीं, जबकि इस बार उसका खाता भी नहीं खुला। इस बार लोकसभा-विधानसभा दोनों ही चुनाव में उसका आज तक का सबसे खराब प्रदर्शन रहा है। इसी प्रकार इस लोकसभा चुनाव में केसीआर की बीआरएस, दुष्यंत चौटाला की जेजेपी, एआईडीएमके और मेहबूबा मुफ्ती की पीडीपी भी अपना खाता खोलने में असफल रही।

इंदौर में बाइक चोर को लिखी इमोशनल चिट्ठी वायरल

लिखा- आप गाड़ी ले गए, उसी पर रोज बेटे को घुमाता था, अब वह रोता रहता है

इंदौर (नप्र)। रियल एस्टेट सेक्टर में काम करने वाले युवक ने बाइक चोरी कर ले जाने वाले चोर के नाम सोशल मीडिया पर लेटर पोस्ट किया है। बाइक चोरी करता चोर सीसीटीवी कैमरों में भी कैद हो गया। घटना को चार दिन हो गए हैं, लेकिन वाहन चोर गिरफ्त से दूर है। इससे परेशान होकर पीड़ित ने सोशल मीडिया को जरिया बनाकर चोर से अपील की है। यह लेटर उन्होंने कई ग्रुप पर वायरल किया है। भंवरकुआ पुलिस बाइक चोर की तलाश कर रही है।मामला मूसाखेड़ी निवासी सतीश साल्वे (27) का है। वे भंवरकुआ क्षेत्र स्थित एक कंपनी में जॉब करते हैं। 4 जून को उन्होंने अपनी बाइक भंवरकुआ चौराहा स्थित वेदा बिजनेस पार्क के बेसमैंट (2) में खड़ी की थी। शाम 6.30 बजे जब वे घर जाने के लिए बाइक लेने गए तो नहीं मिली। उन्होंने दोनों बेसमैंट सहित आसपास चेक किया लेकिन नहीं मिली। इस पर उन्होंने बिल्डिंग के सीसीटीवी कैमरों के फुटेज देखे तो घटना का खुलासा हुआ।कैमरों में बेसमैंट में दोपहर ढाई बजे एक युवक दिख रहा है। वह यहां करीब पौन घंटे रहा और आने-जाने वालों की टोह लेता रहा। इस दौरान उसने अपने पास की चाबी से कई बाइक का ताला खोलने की कोशिश की लेकिन सफल नहीं हुआ। आखिरी में वह साल्वे की बाइक का ताला खोल कर बाइक ले जाने में सफल रहा। बेसमैंट में सिक्योरिटी गार्ड की ड्यूटी रहती है, लेकिन उन्हें

भनक तक नहीं लगी। अगले दिन साल्वे भंवरकुआ थाने पहुंचे और रिपोर्ट दर्ज कराई।

अब जानिए साल्वे की पीड़ा

साल्वे के परिवार में पत्नी, दो बच्चे आराध्या (7) और कृष्णा (3), मां और तीन बहनें हैं। पिता का पिछले साल निधन हो चुका है। उनका कहना है कि मेरा वेतन बहुत कम है। मैंने 2015 में बमुश्किल डाउन पेमेंट पर 70 हजार रुपए की बाइक फाइनेंस कराई थी। परिवार की पूरी जिम्मेदारी साल्वे पर है। ऐसे में अब बिना बाइक के रोज समय पर ऑफिस आना-जाना, फिर परिवार के अन्य काम भी रहते हैं जिससे अब परेशानियां बढ़ती जा रही है। साल्वे को इस बात का ज्यादा दुख है कि वे रोज सुबह-शाम अपने बच्चे को बाइक से घुमाते थे। अब बच्चा रोज बाइक के लिए जिद करता है और रोता है। खाना भी नहीं खाता।मूसाखेड़ी निवासी सतीश साल्वे जिनकी बाइक चोरी होने के बाद उन्होंने चोर के नाम लेटर लिखकर उसे सोशल मीडिया पर वायरल किया है।

चोर को पत्र में लिखा- मेरी गाड़ी लौटा दीजिए, मैं आप को दुआ दूंगा

आदरणीय चोर साहब,

मेरी हीरो पैशन प्रो गाड़ी आप वेदा बिजनेस पार्क से चुरा कर ले गए हैं।आप चोरी करते हुए कैमरे में कैद हुए हैं।मेरा नाम सतीश साल्वे है।मैं एक निजी ऑफिस में एक छोटे पद पर कर्मचारी हूं।मुझे हर महीने सिर्फ आठ हजार रुपए मिलते हैं।मैंने जिंदगी भर की कमाई से इस गाड़ी को खरीदा था।जब से मेरी गाड़ी चोरी हुई है तब से मैं सो नहीं पाया हूं।मैं बहुत दुखी हूं।मेरे पिताजी भी नहीं हैं।मेरी तीन छोटी बहनें भी हैं और पूरे परिवार का भार मुझ पर है।मैं बहुत मजबूर हूं।मैं उम्मीद करता हूं कि मेरा ये मैसेज आप तक जरूर पहुंचेगा।मेरी मजबूरी समझिए चोर साहब।मेरी गाड़ी लौटा दीजिये।मैं आप को दुआ दूंगा।मैं गरीब इंसान हूं।मेरी जिंदगी भर की कमाई यह गाड़ी है।मेरा बच्चा गाड़ी पर घूमने के लिए रोता है।मैं उसे क्या जवाब दूं, जो हर रोज इस गाड़ी पर घूमता था उसने खाना भी छोड़ दिया है।और मेरे पास अब दूसरी गाड़ी खरीदने के पैसे भी नही हैं।मैं आपको हर गली मोहल्ले में ढूंढ रहा हूं।कृपा कर मेरी गाड़ी लौटा दीजिए।

निवेदक - सतीश साल्वे

इंदौर में इंस्टाग्राम फ्रेंड ने नाबालिग से किया रेप

इंदौर (नप्र)। इंदौर में एक नाबालिग से इंस्टाग्राम पर दोस्ती और रेप का मामला सामने आया है। पीड़िता की मां ने आरोपी के साथ सगाई की बात भी पक्की की थी। आरोपी ने इंदौर में पीड़िता से जबरदस्ती संबंध बनाए। धोखे से पिता की अंगूठी भी ले ली। मांगने पर धमकाने लगा। वीडियो वायरल करने की धमकी दी और एयरपोर्ट इलाके की होटल में ले जाकर भी जबरन संबंध बनाए।

अब आरोपी पर रेप का केस दर्ज किया गया है।तिलक नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक 17 साल की नाबालिग ने योगेश फर्सवानी, निवासी खुजनेर जिला राजगढ़ के खिलाफ गुरुवार देर रात रेप के मामले में केस दर्ज कराया है। पीड़िता तिलक नगर इलाके में एक अपार्टमैंट में अपने माता-पिता के साथ किराए से रहती थी। वर्तमान में वह कैट रोड में रह रही है।

करीब 10 दिन पहले योगेश का कॉल आया कि उसे बाहर जाना है, उसे पापा की सोने की अंगूठी दे दो। वापस आकर दे देगा। इसके बाद योगेश घर आया और एअरपोर्ट रोड़ की किसी होटल में जिसका नाम ध्यान नहीं वहां ले गया। यहां पापा की अंगूठी लेने के बाद उसे 4 से 5 दिन में वापस करने की बात कही। फिर संबंध बनाकर घर छोड़कर चला गया।

इंदौर में रात से बारिश का दौर

सुबह बादलों छाने के साथ रिमझिम, दोपहर बाद भी गरज-चमक के साथ बारिश के आसार

इंदौर (नप्र)। इंदौर में दोपहर हल्की बारिश के बाद आधी रात को फिर बारिश शुरू हो गई। सुबह 8 बजे तक अलग-अलग हिस्सों में रुक-रुककर और फिर रिमझिम होती रही। अब तापमान में गिरावट के साथ बादल छाए हुए हैं। इसके साथ ही मौसम ठण्डा है। मौसम वैज्ञानिकों ने शनिवार दोपहर बाद गरज-चमक के साथ हल्की बारिश भी हुई। शुक्रवार को सुबह से मौसम साफ था। फिर तेजी से धूप चढ़ी और दोपहर को तापमान 40 डिग्री तक पहुंच गया। खास बात यह कि चार दिन की राहत के बाद पारा फिर 40 डिग्री पार गया। इस दौरान गर्मी और उमस का खासा असर रहा। फिर बादल छाए और कई हिस्सों में हल्की बारिश शुरू हो गई जो कुछ देर बाद बंद हो गई। इसके बाद भी बादल छाए रहे।इस बीच मौसम विभाग ने शुक्रवार शाम 7.30 बजे अलर्ट जारी कर इंदौर सहित कई हिस्सों में अगले तीन घंटों 70 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने और ओला वृष्टि के आसार जताए। फिर आधी रात को हल्की बारिश शुरू हुई। इसके बाद तड़के रिमझिम शुरू हुई और सुबह 8 बजे तक होती रही। प्री मानसून के दौर में पिछले 24 घंटों में 10.5 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई है। रात के तापमान में 6 डिग्री की गिरावट आई है। इस दौरान तापमान 22.6 (-3) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा के मुताबिक वेस्टर्न डिस्टर्बेंस, साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन गुजरने की वजह से प्रदेश में आंधी और बारिश का दौर चल रहा है जबकि कई हिस्सों में गर्मी का भी असर है। मानसून भी लगातार गति से आगे बढ़ रहा है। ऐसे में इसके मप्र में समय पर पहुंचने की संभावना बनी हुई है। इंदौर में आज भी गरज-चमक के साथ बारिश होगी।

लेस्बियन लड़कियों ने थाने में किया हंगामा

इंदौर (नप्र)। परदेशीपुरा थाने पर कल रात जमकर हंगामा हुआ। इलाके की रहने वाली दो लड़कियां पिछले दिनों लापता हो गई थी। शुक्रवार को जब लौटी तो पता लगा कि दोनों आपस में प्रेम करती हैं और साथ रहना चाहती है। माता-पिता इस बात के लिए तैयार नहीं हुए। इसी बात को लेकर हंगामा हुआ।

परदेशीपुरा पुलिस के अनुसार करीब 10 दिन पहले क्षेत्र की दो लड़कियां लापता हो गई थी। दोनों लड़कियों में बचपन से दोस्ती है। परिजन सामान्य दोस्ती मान रहे थे। जबकि लड़कियों के बीच अलग ही प्रेम' था।दोनों पिछले दिनों एक साथ घर से लापता हो गई थी। उनके परिजनों ने थाने में गुमशुदगी दर्ज करवाई थी। शुक्रवार को दोनों लड़कियां लौटी और उन्होंने पुलिस को कहा कि वह दोनों अब साथ में जीवन बिताएंगी। दोनों के घरवालों को बुलवाया गया और उन्हें हकीकत बताई गई तो हंगामा हो गया।माता-पिता अपनी- अपनी लड़कियों को साथ ले जाना चाहते थे और लड़कियां साथ जाना नहीं चाहती थी। इस बात को लेकर करीब दो घंटे तक हंगामा होता रहा। बाद में जैसे-तैसे समझा कर दोनों को अलग-अलग रवाना किया गया। परिजनों को खाली हाथ ही लौटना पड़ा।

इंदौर में भाजपा का गमछा डालकर कांग्रेस ने किया ड्रामा

शिवराजसिंह को पीएम और लालवानी को गृह मंत्री बनाने की मांग

इंदौर (नप्र)। कांग्रेसियों ने केंद्र सरकार के शपथ ग्रहण के पहले शिवराज सिंह चौहान को प्रधानमंत्री बनाने की मांग की है। इतना ही नहीं कांग्रेसी चाहते हैं कि शंकर लालवानी गृहमंत्री बने। इस मांग को रखने के लिए कांग्रेस ने एक ड्रामा भी किया। वे सड़क पर आए और कांग्रेस के बजाय भाजपा का डालकर नाटक का मंचन किया। इसमें भाजपा का डमी कार्यालय भी बनाया गया था। शहर कांग्रेस कमेटी और मध्य प्रदेश राजीव विकास केंद्र द्वारा शनिवार को यह आयोजन किया इसमें शहर कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने डमी भाजपा नेता बनकर गले में भाजपा का दुपट्टा डाला था।

शिवराजसिंह चौहान का मुखौटा लगाकर प्रधानमंत्री और शंकर लालवानी को गृहमंत्री बनने की मांग की गई है।इंदौर कार्यकारी अध्यक्ष देवेंद्र सिंह यादव ने बताया कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने भाजपा का दुपट्टा डालकर भाजपा नेताओं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ मुहिम छेड़ दी है की शिवराज सिंह चौहान, नरेंद्र मोदी से ज्यादा योग्य हैं। वे तानाशाह भी नहीं है। शिवराज सिंह चौहान साढ़े आठ लाख वोटों से चुनाव जीते हैं और लगभग 20 साल तक मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं।

शादी का झांसा देकर महिला से दुष्कर्म

इंदौर (नप्र)। गांधी नगर में रहने वाली 29 साल की महिला के साथ दुष्कर्म का मामला सामने आया है। महिला के पति की मौत हो चुकी है। आरोपी से महिला को एक बच्चा भी है। मामले में शिकायत पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया है।बाणगंगा थाना पुलिस के मुताबिक पीड़िता के पति का कुछ समय पहले देहांत हो गया था, जिसके बाद वो मायके आकर रहने लगी। जहां उसकी मुलाकात आरोपी संजयसिंह चौहान जोधपुर से हुई। संजय ने पीड़िता को शादी का झांसा देकर कई बार संबंध बनाए।पुलिस को पीड़िता ने बताया कि जब भी शादी की बात की तो वह सही जवाब नहीं देता था, इसी बीच एक बेटा भी हो गया।

इंदौर में दफनाए गए कछुए के शव को निकाला

शिकायत के बाद वन विभाग ने जिला अस्पताल कैंपस में की खुदाई, तंत्र क्रिया का आरोप

इंदौर (नप्र)। इंदौर में 2 महीने पहले जिला अस्पताल परिसर में दफनाए गए कछुए को शिकायत के बाद वन विभाग की टीम ने खुदाई कर निकाला है। विभाग को दो महीने पहले जिला अस्पताल में तंत्र क्रिया कर एक कछुए को लाल कपड़े में लपेट कर दफनाने (गाड़ने) की शिकायत मिली थी। आरोप है कि जिला अस्पताल के कर्मचारियों ने कछुए को मार कर दफना दिया था।शिकायत के बाद वन विभाग की

टीम कछुए को दफनाने वाले जिला अस्पताल के कर्मचारी शेखर जोशी ड्रेसर ग्रेड-1, अशोक मालवीय वाहन चालक और संजय काकड़े से पूछताछ में जुटी थी। पूछताछ के बाद वन विभाग की टीम आज जिला अस्पताल पहुंची और खुदाई कर वहां से कछुआ निकाला। शिकायत के बाद से वन विभाग पूरे मामले में तांत्रिक क्रिया को आधार मानकर बारीकी से जांच करने में जुटा हुआ था। एक अन्य अभिषेक नामक व्यक्ति ने भी मामले की शिकायत की थी। इसके बाद आज कछुए को निकाला गया। अब कछुए का पोस्टमॉर्टम कराया जाएगा।

रिपोर्ट आने के बाद वन विभाग आगे की कार्रवाई करेगा। इधर, सिविल सर्जन डॉ जीएल सोढ़ी का कहना है कि मामला 2 महीने पुराना है। कर्मचारियों को सड़क पर मरा हुआ कछुआ मिला था। उन्होंने उसे अस्पताल परिसर में दफनाया था। इसकी शिकायत तब 3 दिन बाद मुझे मिली तो मैंने वन विभाग को सूचना दी थी।

डीएवीवी पेपर लीक- प्रिंसिपल से होगी पूछताछ

अब तक तीन गिरफ्तार

अक्षय बम के कॉलेज की मान्यता खत्म करने की मांग

इंदौर (नप्र)। इंदौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में हुए पेपर लीक मामले में पुलिस 3 आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। लोकसभा चुनाव के बीच कांग्रेस से बीजेपी में आए अक्षय बम के आइडिलिक कॉलेज से पेपर लीक होने की जानकारी सामने आने के बाद यह कार्रवाई की गई। पुलिस अब कॉलेज की प्रिंसिपल से पूछताछ करेगी।सवाल खड़े हो रहे हैं कि आरोपी कम्प्यूटर ऑपरेटर कैसे प्रिंसिपल के रूम तक पहुंच गया। प्रिंसिपल की इसमें मिलीभगत तो नहीं थी। इस बीच कॉलेज की मान्यता रद्द करने की मांग भी जोर पकड़ने लगी है। छोटी ग्वालटोली थाना प्रभारी उमेश यादव ने कहा, मामले में जांच की जा रही है। आइडिलिक कॉलेज की प्रिंसिपल से भी पूछताछ करेंगे।

ये है पेपरलीक का पूरा मामला

डीएवीवी की एमबीए परीक्षा के पेपर पिछले महीने लीक हो गए थे। मामले में शिकायत के बाद पुलिस ने आइडिलिक कॉलेज के ऑपरेटर दीपक पिता सुरेश सोलंकी, निवासी रंगवासा रोड को गिरफ्तार किया है। उसने कॉलेज प्रिंसिपल के रूम से पेपर के बंडल की सील लोहे के स्केल से तोड़कर पेपर निकाला और मोबाइल से फोटो खींचकर कॉलेज के एक छात्र को दो हजार रुपए में बेचा था। फिर छात्र ने इसे अपने साथी को वॉट्सऐप पर भेजा। पुलिस ने स्टूडेंट धीरेंद्र नरवरिया को पकड़ा। धीरेंद्र कॉलेज में एमबीए प्रथम वर्ष का छात्र है। उससे जानकारी मिली कि उसके पास पेपर छात्र गौरव सिंह गौर के जरिए आया था।

बैक हुआ तो ऑपरेटर से की सेटिंग

छात्र गौरव ने पुलिस पूछताछ में कबूला कि उसे 'अकाउंटिंग फॉर मैनेजर्स और क्वांटिटिव टेक्निक' विषय में एटीकेटी आई थी। इससे वह तनाव में था। दो विषयों में फर्स्ट ईयर में बैक होने के बाद उसने कॉलेज के कई बाबुओं और स्टाफ के अन्य लोगों से बात की, तब ऑपरेटर दीपक सोलंकी से संपर्क हुआ।

8 हजार रुपए में हुआ पेपर का सौदा

छात्र गौरव ने आरोपी दीपक से संपर्क किया तो दीपक ने 8 हजार रुपए की मांग की। इस पर उसने 2 हजार रुपए ऑनलाइन ट्रांसफर किए। दीपक ने बताया कि कॉलेज प्रिंसिपल के कक्ष में सीसीटीवी कैमरे नहीं थे। जिस अलमारी में पेपर के बंडल रखे जाते हैं, उसकी चाबी प्रिंसिपल के ड्रॉवर में ही रहती है। शाम को स्टाफ के जाने के बाद उसने बंडल निकाला और स्केल की मदद से सील उचकाकर पेपर निकाला और फिर वापस रख दिया।

कॉलेज की एमबीए फीस 1.3 लाख- आइडिलिक कॉलेज में दो साल के एमबीए विथ ग्लोबल कोर्स की फीस करीब पौने तीन लाख है, जबकि सामान्य एमबीए की फीस कॉलेज 1 लाख 30 हजार वसूल रहा है।

पुस्तक चर्चा

एकता कानूनगो बक्षी

कविता संग्रह : धार फूलों की

मनुष्य भले से सभ्यता के किसी भी पायदान पर हो उसके लिए सब से कठिन होता है प्रेम करना, स्नेह लुटाना, किसी की लगातार परवाह करते रहना, विचारों की लड़ाई में दो कदम पीछे रहकर दूसरे को सौहार्द की भाषा से अपना बनाने का प्रयास करते रहना। हम कितने ही सम्पन्न हो जाएं निस्वार्थ प्रेम,आत्मीयता के बिना हम हमेशा खाली ही रहेंगे। संवेदनशील व्यक्ति अच्छे से जानता है कि युद्ध जीतने के बाद भी हम बहुत कुछ खो देते हैं। यह कभी ज़रूरी नहीं कि अपनी आस्था पर सहमति दूसरे की आस्था के अनादर से ही संभव हो सके,'कि बस मैं और मेरे जैसे ही सब तरफ दिखें तुम्हारा वजूद ही ना हो'। ऐसे समय में जब नफरत, क्रोध,असहनशीलता की बीमारी से समाज जकड़ा हुआ होता है तब अपनी दूरदर्शिता और विवेक के साथ सच्चा कवि जरूर अपनी कलम उठाता है। बाज़ार में उपलब्ध कई धारदार साधनों,हथियारों, चीखती, चुभती घटिया शब्दावली से सनी भाषा की जगह अपनी बात सब तक पंहुचाने के लिए ही वह चुनता है शब्द फूलों को, यही है धार फूलों की।

'धार फूलों की' कविता संग्रह में भी कुछ ऐसी ही महत्वपूर्ण कविताएँ हैं ।

ये कविताएं केवल प्रेम की ,सद्भाव की कविताएं ही नही हैं इन कविताओं के कथ्य में कई जरूरी तथ्य और तत्व हैं जिनसे ऐसी ज़मीन तैयार होना संभव होता है जहां मनुष्यता के फूल खिल पाते हैं। मनुष्यता वास्तविक अर्थों में जन्म ले सकती है। हम ज़रूरी मुद्दों को लेकर संवेदनशील होते हैं, खुद से ऊपर उठकर उन लोगो का भी सोच पाते हैं जिनका अस्तित्व समाज की बनावटी चमक में धूमिल हो गया है।

इन कविताओं के माध्यम से कवि ने गंभीर मुद्दों को छुआ है। कविताओं का कैनवास बेहद विशाल है - वे केवल प्रेम, प्रकृति और हमारी कोमल भावनाओं की ही बात नहीं करती हैं,वे उपेक्षित वर्ग की आवाज़ बन उनके साथ खड़ी नज़र आती हैं। समाज में व्याप्त चालाकियों से हमें अवगत करा रही होती हैं। हमारी दृष्टि को बेहद खूबसूरती से तराश रही होती है । कविता चाकू में कवि लिखते हैं - हत्या ही नही करता किसी की /पेंसिल की नोक भी बना लेता है /चित्रकार चाकू की मदद से।

कविता स्पीड ब्रेकर में कवि लिखते हैं - नीतियों के ब्रेकरों से ज्यों/ औंधे मुंह गिर पड़ा गरीब आदमी/ लहूलुहान है हिसाब -किताब उसका /ठोकर खाकर।

कुछ दुख इतने जटिल होते हैं जिन्हें अभिव्यक्त करने का साहस केवल कविताएं ही कर सकती हैं पुनःविस्थापन एक ऐसी ही सटीक कविता है - पिता के घर से /ससुराल आई थी कभी /अब डूब रहा गांव/ विस्थापन के आंसुओं को/ किसी बांध में समेट लेना /आसाँ रहा नहीं कभी।

' निवेदन' भी इसी क्रम में बेहद महत्वपूर्ण कविता है कुछ पंक्तियां - निवेदन केवल इतना भर है / की जब पंछी सूर्योदय के स्वागत में/ गुनगुना रहें हों/ तब बंदूक का धमाका न किया जाए/ये हमारे घर से निकलने का वक्त होता है।

' पहचान ' कविता में कवि लिखते हैं - वे जानते थे मुझे/ जय श्री राम करते/ प्रतिदिन राह चलते / मैं भी बड़ी गर्म जोशी से/ दुआ सलाम का जवाब देता था / मार्निंग वॉक करते हुए / हमारी जान पहचान जितनी भी / शायद नहीं थी पहचान / राम जी और/ सलाम साहब की/जब बस्ती में आग लगी/ पहचानने से इनकार कर दिया एक दूसरे को/ प्रभात फेरी पर निकले / दो सज्जनों ने।

कविता ' बाढ़ ' भी हमें विचार करने पर मजबूर कर देती है । बेराह हुई कोई भी चीज़ कितनो का जीवन बर्बाद करने में सक्षम हो सकती है। गलत नीतियों से परहेज रखना, हमारे विचार को संतुलित बनाएं रखना कितना आवश्यक है। लिखते है - इक्कीसवीं सदी की बस्ती में/ सौलहवीं शताब्दी के अवशेष/दिखने लगते हैं बाढ़ के बाद।

कविता संग्रह में कई कविताओं के भीतर व्यंग्य भी धीमे से प्रवेश करता है। कविताएं और व्यंग्य देखने मे एक दूसरे के संबधी लगते हैं, दोनों ही दुनिया की सब से करुण कहानियां हमें सुना रहे होते हैं, सकारात्मक बदलाव लाने का जुझारूपन दोनो में ही स्पष्ट नज़र आता है, अपने सौंदर्य और रोचकता को बनाये रखते हुए अंत में एक बहुत गहरी टीस हमें दे जाते हैं। व्यंग्य और कविता का यह अनूठा मिलन इस संग्रह को विशिष्ठ बना देता है ।

एक जंगल मर गया कविता में कवि लिखते हैं - महामनो के पदों पर / रास्ते बनते नहीं/ तोड़ निर्बल का घरौंदा/ राजपथ ये बन गया।

कविता नित नई हैं बेड़ियाँ - बेबसी तो देखिए/ इस महा गणराज्य की/ याचना के स्वर दबे/ जयकार बहुत बाज़ार में। वह तो बस तारीख थी /जब से हम आज़ाद हैं/ नित नई हैं बेड़ियाँ/ बेधड़क बाज़र में।

इसी क्रम में नया हो रहा इंडिया, गणतंत्र में,अदृश्य है

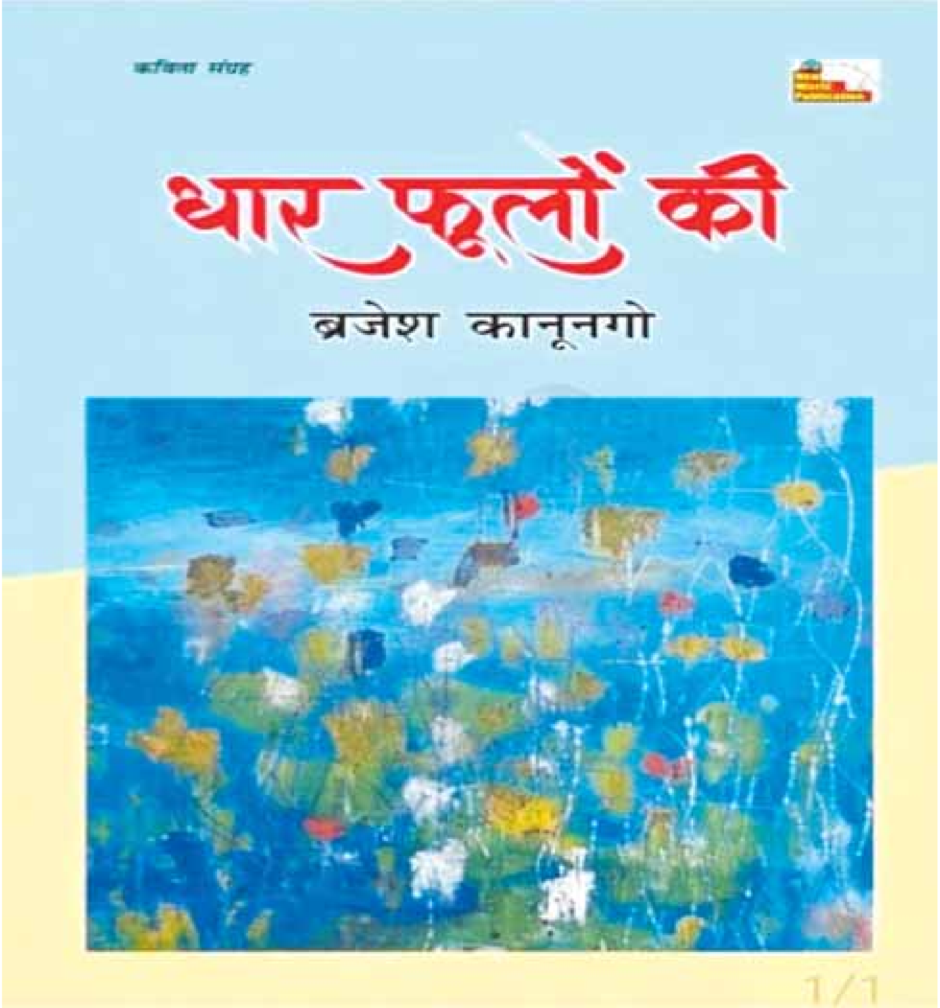

सच छौंक ,चीख यह जनलोक चेतना की महत्वपूर्ण कविताएं हैं। चाहे शाही देव को/ छप्पन भोग खिलाय/खेतिहर की पत्तल में/काजू नहीं सुहाय।

कविता छौंक की पंक्तियां हैं -

ऐसा क्या गजब हो गया/ कि रामचरण की बगीची में सलीम की बकरी के घुस आने से / सब्जियों की तरह कट गए लोग/ ये कौन सा छौंक लगाया गया है /कि धुआं धुआं सा हो गया है चारों तरफ।

तलाशी चौराहा -

जब छट जाती है चौराहे की भीड़/ वे गलियों की ओर निकल पड़ते हैं/ घरों के बेकार हुए सामान की गुहार लगाते/ जुटा ही लेते हैं अगले दिन तक कि खुशियाँ/ भीड़ में नहीं/ विकल्प की तलाश में जुटते हैं कुछ लोग।

'हुसैन की दुनिया' अद्भुत कविता है , कलाकार का कला को समर्पित जीवन और विवशता को अंकित करता है। घोड़ो में तो जैसे / जान बसती थी चित्रकार की/ इठलाते छलांग लगाते शक्तिशाली घोड़े / उल्लास से भरते रहे हमारी दुनिया/ और जब बे वतन हुआ/ छलांग गया एक निराश घोड़ा / संसार की सारी दूरियां।

कई कविताओ में इस तरह के दृश्य बिम्ब हैं कि हम खुद को पूरी तरह से कवि के साथ पाते हैं। पत्थर की घट्टी कविता की यह पंक्तियां देखें - प्रभातफेरी पर निकले सज्जनों के गान के साथ /शुरू होता था दादी का घट्टी घुमाना/लोरी की तरह फूट पड़ती थी गड़गड़ाहट/ जो नींद के सुखद संसार मे फिर से ले जाती थी जागते हुए बच्चों को।

प्रेम के बीज पहले खुद में रोपित किये जाते हैं फिर अपनों तक बिखरते हैं, तब जाकर हम समाज देश ,परिवेश और विश्व मे प्रेम दे पाते हैं। यही प्रेम ,स्नेह स्वस्थ और सुंदर समाज की रचना करता है। इस किताब में हमे ऐसी कई खूबसूरत कविताएं पढ़ने को मिलती हैं जो हमारा मनोबल बढ़ाती हैं,अपनों से खुलकर स्नेह करने को कहती हैं ,प्रकृति को निहारने और उस के साथ एक हो जाने का कारण बताती हैं। बेटी का आना ,चिड़िया का सितार, पांच हज़ार शामों वाली लड़की, खाता बही में प्रेम , भरा हुआ, दूरियां, निकट की खुशी, बगिया जीवन, नीम को देखना, जिप्सी, आदि ऐसी ही कुछ भावनात्मक कविताएं हैं।

कविता धनवान की यह पंक्तियां पढ़ें-

निकाल लाया है गहरे कुएँ से/डूबा हुआ खज़ाना/तिजोरी के पास तैनात नहीं है/ काला नाग फन फैलाए।/ जानता है संसार की/ सबसे कठिन भाषा/और पढ़ लेता है/दुखी आदमी का चेहरा। / मनुष्यता के मोतियों से/ प्रेम के बगीचे खरीदकर/बाँट देता है मीठे फल/गरीबों में। / कितना अजीब है कि/ संसार के सबसे धनवान के माथे पर/ दिखाई नहीं देतीं चिंता की रेखाएँ।

' धार फूलों की ' कविता संग्रह को आज के समय में अगर हम इसे प्रकृति, मनुष्य और सामाजिकता से प्रतिबद्ध विचारशील कविताओं के संग्रह की तरह संबोधित करें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हम एक चीखते हुए दौर से गुज़र रहे हैं, हमारी भाषा अभी तक के अपने सब से निचले पायदान पर है, विनम्रता खो सी गयी है, हमारे मुद्दे उथले हो चुके हैं, हमारी कोमल भावनओं को प्रदूषित कर दिया गया है, हमारे भीतर की नमी समाप्त होती चली जा रही है। ऐसे ही चलता रहा तो हम सब कुछ खत्म कर देंगे। ऐसे में ये कविताएं हौसला देती हैं।

(पुस्तक - धार फूलों की, कवि - ब्रजेश कानूनगो, प्रकाशक - न्यू वर्ड पब्लिकेशन,दिल्ली, मूल्य - 225)

कविता

नदी हो जाना

सुधीर कुमार सोनी

ये सारे शहर गाँव के
गली-मोहल्लों में
लड़कियाँ/स्त्रियाँ
दौड़-दौड़कर पानी भरती दिखती हैं
बर्तन खाली-खाली
भरे-भरे
आते-जाते दिखते हैं
बर्तन खाली
भरे होते रहते हैं
और लड़कियाँ/स्त्रियाँ
दौड़-दौड़ कर नदी हो जाती हैं।
================

गुलमोहर

कमलेश कुमार दीवान

फूल रंक्तिम ,अद्भुत छटाएं गुलमोहर को, क्या हुआ है
गर्म धरती, तप्त मौसम, गुलमोहर को, क्या हुआ है।
खिलें हैं गुल,और गुलों में खिलखिलाती पंखुड़ियां हैं
विछ गई आंगन बगीचे गुलमोहर को, क्या हुआ है।
खूबसूरत फूल हैं दहकते से ,महक कम बहुत भीनी
देखते हैं जहां तक है फूल, गुलमोहर को,क्या हुआ है।
इस हवा में कौन था कल ये शजर किस से मिले हैं
गीत गाते गुनगुनाते गुल, गुलमोहर को, क्या हुआ है।
चुप समा है गुमसुम बहारे दरकी दरकी ये धरा भी
सब समझते इस कहर को, गुलमोहर को क्या हुआ है।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लघुकथा

दिनेश दिनकर

बीमार बहुएं

रश्मि और उसकी ननंद पूजा की शादी को हुए दो वर्ष हो चुके हैं। रश्मि सात महीने के गर्भ से है और उसकी ननंद पूजा तीन महीने के गर्भ से। देर रात गर्मी के कारण बेहोश होने पर पूजा को अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा और रश्मि सुबह उठकर फोन पर उसकी तबियत के बारे में पता कर रही थी। देर रात सास-ससुर को इसलिए सूचित नहीं किया कि खामखां परेशान होंगे। तभी रश्मि की सास गुस्से में उसके कमरे में चिल्लाते हुए आई और बोली कि पता नहीं आजकल की बहुओं को कितनी नींद आती है, गर्भावस्था में ही तो हैं कोई अपाहिज नहीं हैं कि बिस्तर में ही पड़ी रहें। हमारे जमाने में तो बच्चे भी पालते थे और घर का सारा काम भी करते थे। अचानक रश्मि के सब्र का बांध टूट गया और वह भी चिल्लाने लगी कि आजकल की बहूएं ही नहीं बेटियां भी बीमार रहती हैं। मैं तो घर में ही हूं और देर-सवेर अपना काम स्वयं कर रही हूं, आपकी बेटी को तो अस्पताल में एडमिट करवाना पड़ गया। इतना सुनते ही रश्मि की सास हड़बड़ाते हुए अपने छोटे बेटे के कमरे में गई और अपनी बेटी से फोन पर बात करने लगी। अब रश्मि अपने आंसू पोंछते हुए कभी दीवार घड़ी की ओर देख रही है तो कभी अपने पेट में पल रहे शिशु की ओर.......

लघुकथा

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

भण्डारा

हर साल की तरह इस बार भी श्याम नगर के मंदिर में गोविन्द सेवार्थ समिति का भण्डारा चल रहा था। जैसे जैसे समय बीता पच्चीस सालों में भण्डारे के व्यंजन भी बदलते गये। हलवा, पूड़ी से अब छोला, चावल, पूड़ी, सब्जी, आइसक्रीम और फल आदि की व्यवस्था। गर्मी से बचने के लिए केवड़े वाला शरबत। भक्त जन पहले दर्शन करते फिर फिर भण्डारे की लाइन में। लोगों को लाइन में रखने के लिए समाज सेवी मुस्तैद थे। सामान्य जन लाइन से और विशिष्ट जन जैसी चाहें उनके मन माफिक उपलब्धता।

गुरुपरसाद दिन भर के थके मांदे। हाथ मुंह धोया। हाथ जोड़े। थैली टटोली और दान पात्र में। बचपन से सुन रखा था कि भण्डारे में दान जरूर देना चाहिए। शरबत पिया और फिर भगवान को धन्यवाद करते हुए प्रसाद ग्रहण किया, पानी पिया। थोड़ी देर इधर उधर देखा। भीड़ पर विश्वास कर दुबारा लाइन में खड़े हो गये। नजर रखने वालों से ओट कैसे होते। हर एक व्यक्ति और प्लेट पर निगाह। खेलाड़ी भाई ने पकड़ लिया। प्रसाद में निगरानी का जिम्मा सद्धा और खेलाड़ी भाई के कंधों पर ही रहता। 'एक बार में पेट नहीं भरा?' विपन्नता की यह समाज दशा उसके विपन्न होने से अधिक मारक थी। पेट पापी और भूख बेशर्म होती है। गुरपरसाद को पोते का चेहरा याद आया। हम तो प्रसाद पा लिये, बस्स थोड़ा सा उसके लिए।

संकल्प लीजिए, महाराज!

मुरलीधर चाँदनीवाला

शपथ नहीं अब,
शपथ के सारे सबद
भीतर से खाली पड़े हैं।
शपथ नहीं अब,
शपथ का कोई राजपथ
संसद की तरफ नहीं जाता।
शपथ नहीं अब,
शपथ के साथ न कोई अथ
न कोई इति।

अपना गोत्र उचारिए 'भारत',
हाथ में जल लेकर छोड़िए
और संकल्प लीजिए
कि आप रक्षा करेंगे आर्यभूमि की,
यहाँ पलने वाली एक-एक साँस की,
यहाँ के सब धर्मों की,
रीति-रिवाजों की, उन विश्वासों की
जिन पर खड़ा हुआ स्वाभिमानी हिमालय।

संकल्प लीजिए कि
टूटे हुए विचार, टूटी शृंखलाएँ
जोड़ेंगे आप सबको साथ में ले कर,
अश्वमेध का घोड़ा
पूरे पाँच साल प्रदक्षिणा करेगा
प्रिय मातृभूमि की,
और उसके पीछे आपके
साधु-साध्वियाँ, सैनिक-सिपाही
ध्वजा उठाये अनवरत
'चरैवेति' की धुन में चलेंगे।

संकल्प लीजिए कि अब
शोर नहीं मचाया जायेगा,
ढिंढोरा नहीं पीटा जायेगा,
आत्मप्रवंचना से बचेंगे आपके सिपाही
और आत्मप्रशंसा से भी,
मीठे हितकारी बोल गूँजते रहेंगे
इस पवित्र मंदिर में,
भीतर-बाहर के सब असुरों का
दमन होगा इसी राजसूय में।
चौथे खम्बे पर चढ़े हुए लोगों को
मंदिर पर कीचड़ उछालने का
कोई मौका अब नहीं होगा।

संकल्प लीजिए कि अब
आप हम सबके पिता की तरह होंगे,
हमारे लिये अन्न-जल जुटाएंगे,
रहने के लिये छत देंगे,
पढ़ाएंगे-लिखाएंगे हमें
और अपने पैरों पर खड़ा करेंगे।

बदले में हमसे भी
संकल्प लीजिए, महाराज!
हम आपकी शान बनेंगे
और आपका साहस
खंडित होने नहीं देंगे।

एए अल्मेलकर: लोकरंगों को कृतियों में ढालने वाले कलाकार

कला

पंकज तिवारी
कला समीक्षक

कलाकार गहन अध्ययन के साथ ही विषय के गहराइयों तक जाकर विषय से संघर्ष करता है, जूझता है परिस्थितियों से उसके बाद उबरते हुए अपनी अभिव्यक्ति करता है। कभी-कभी तुरंत अभिव्यक्ति हो जाती है तो कभी-कभी उसी अभिव्यक्ति में वर्षों लग जाते हैं। कलाकार विषय में डूब जाना चाहता है, मर मिट जाना चाहता है उसके बाद कहीं जाकर भावयुक्त कृतियों का निर्माण कर पाता है। कुछ इसी तरह के कलाकार थे ए. ए. अल्मेलकर जो निरंतर जंगलों में घूमते रहे। वृक्ष, वृक्ष के तने, पत्तियों का शोर, झुरमुट, झाड़ियाँ, दो डालियों के बीच से दिखाई देता वन का बेहतरीन व्यू, पत्तियों से छन कर आती सूरज की चमकती, दमकती, लहर मारती किरणें और वहाँ का पूरा माहौल जैसे रच-बस सा गया था अल्मेलकर के जेहन में। पूरा का पूरा जंगल उनके स्केच बुक पर पसर गया हो जैसे। किसी भी एक स्पॉट पर घंटों बैठ कर कृतियों का सृजन उनकी दिनचर्या में शामिल हो गई थी। कृतियों में आलेखन, विवरणात्मक आलेखन जो उन्हें लोक रीतियों से प्राप्त हुआ था, को जंगलों में घूमने से और अधिक विस्तार मिला। उनके कृतियों में पेड़, पौधे, जंगल कुछ विशेष अवस्था के साथ मिलते हैं या कह सकते हैं जंगलों में लुका-छिपी करती रौशनी का असर उनके कृतियों पर भी हैं। किसी का चेहरा कभी नीला तो कभी किसी और रंग में ढल जाता है, जो वास्तव में तो संभव नहीं है पर प्रकाश के खेल से कुछ भी संभव है और जो इनके फलक पर संभव हुआ है। जंगलों में निवास करने वाले वासी भी इनके कृतियों में विशेष उपस्थिति रखते हैं और विशेष तरीके से रखते हैं। रहन-सहन पहनावा सब कुछ जैसे अल्मेलकर के नजरों में बस सा गया था।

कलाकार अल्मेलकर जी जिनके कृतियों में पशु, पक्षी, पेड़-पौधे जंगल तथा वहाँ के लोग अक्सर दिख जाते हैं और दिख जाती है आकृतियों की भाव-भंगिमा, लय, लोच के साथ बहुत ही खूबसूरत आंखें। जहां कृतियां पहले तो बोल्ड स्ट्रोक के साथ यात्रा पर होतीं थीं पर धीरे-धीरे समय के साथ, अपने रास्ते में बदलाव के साथ, कलाकार वाल्टर लैंगहैमर और एन.एस. बेंद्रे से प्रभावित होते हुए नये तथा अपने खुद के राह पर जाकर पूरी हुई, जो बड़ी ही मोहक शैली के रूप में प्रसिद्ध हुई। आदिवासी रहन-सहन, परिवेश, रंगों का ताजापन, सपाट एवं अधिकतर भूरेपन से भरी कलाकृतियों के धनी कलाकार ए. ए. अल्मेलकर जी का जन्म 1920 में हुआ था।

जे. जे. कॉलेज में कला की विधिवत शिक्षा के साथ ही बॉम्बे आर्ट सोसाइटी, ललित कला अकादमी जैसे श्रेष्ठ संस्थानों के तरफ से एक से अधिक बार पुरस्कृत होने का सौभाग्य भी इनको मिला। सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में व्याख्याता के रुप में आपकी सेवा वहां के विद्यार्थियों हेतु बहुत ही लाभप्रद रही। जैतून के तेल से चमक उत्पन्न करना, लोकरंग को लोगों के बीच से ग्रहण करना तथा लोक तक यामिनी राय से भिन्न, स्व के बोध से ओतप्रोत कृतियों को पहुंचाना आपके कार्यक्षेत्र में शामिल था। दैनिक जीवन आपका प्रिय विषय था?। पनघट, पनिहारिन, ग्रामवासी एवं उनका रहन-सहन आपका रहन-सहन हो गया था। मिट्टी से बने घर, सफेद रंग पर विविध रंगों का लेपन तथा उस पर चित्रित लोकरंग का बारीकी से अध्ययन के बाद आपके फलक तक पहुँचना, पारखी दृष्टि एवं सिद्धहस्तता का परिचायक है। पेपर तथा बोर्ड पर स्याही, कैनवास पर तैल रंग, जल रंग का अलग तरीके से प्रयोग बिल्कुल ही ठोस रुप में बिना फ्लो के, भारतीय विषयों को आधुनिक तरीके से पेंट करना, पोत एवं रेखाओं का संयोजन, शुद्ध रंगों का चटख प्रयोग, श्याम-स्वेत कृतियों में रेखाओं का संयमित एवं बोल्ड संचालन, आपके गुणों में शामिल था। महिलाएं, प्रिपरेशन, हनुमान, करमा नृत्य के कई चित्र, मलाया का प्राकृतिक दृश्य, मेरा घर, हिरन, द्वारपाल, दरवाजे की ओट आपकी प्रमुख कृतियां हैं। चित्र ÷गैंडा÷ में बारीक रेखाओं में संयोजित सूर्य, कमल का फूल, चिड़ियों की व्यग्रता के सापेक्ष बड़े ही मौन तरीके से गैंडों का वहां होना चित्र के भारी होने की कहानी बयां कर रही है, भूरे और काले रंगों से युक्त ये चित्र दर्शक को मोहित कर लेती है। 'लेडी इन मार्केट' रेखांकन में जबरदस्त स्ट्रोक देखने को मिलता है। आपके अधिकतर कृतियों में चेहरे पर स्वाभाविक रंग देखने को नहीं मिलता बल्कि रंगों की विविधता होती है। आपके कृतियों में मुगल, राजपूत एवं भारतीय लघुचित्रण शैली के भी दर्शन गाहे-बगाहे हो जाते हैं। कृति 'तीन महिलाएं' में विशेष बात को लेकर गहन चिंता में डूबी महिलाएं दिख रही हैं, मुद्रा एकदम से अपनी बात कह ले रहा है। गले, माथे और केश पर का श्रृंगार प्राकृतिक वस्तुओं से सृजित है पर पूरे कृति में भाव ही भारी है, नेत्र यहां भी उनके विशेषता के अनुरूप ही है। सफेद रंग का अचानक से हुआ प्रयोग कृतियों को तेज प्रदान करता है। रिद्मिक रेखाओं के बीच कुछ ऐसी कृतियाँ भी हैं जिसे देखकर संदेह होता है कि ये उनकी कृति है कारण कहीं-कहीं हथेलियों, चेहरों पर से वो लयात्मकता गायब सी हो गई है जो आपकी पहचान रही है। प्राकृतिक दृश्यों में भी कहीं-कहीं बहुत ही भारीपन की झलक है जो उनके विशेषताओं पर काला टीका का काम करता है। कहीं-कहीं अपरिपक्वता भी परिलक्षित है पर कृतियाँ बेहतरीन, बोल्ड स्ट्रोक युक्त और गहरी भावयुक्त होने से कुछ को नजरंदाज किया जा सकता है। आग लग जाने की वजह से अधिकांश कृतियां नष्ट हो गई पर नहीं नष्ट हुआ आपका जज़्बा, आप निरंतर नये निर्माण में लगे रहे। आपके द्वारा करीब साल भर बाद ही पुनः तैयार कृतियों का प्रदर्शन किया गया। भारत के साथ ही सिंगापुर, इंडोनेशिया, मलेशिया, रोम, टोकियो, हांगकांग, न्यूयॉर्क जैसे देशों में भी आपकी कृतियां खूब सराही गई। स्वर्ण तथा रजत जैसे पुरस्कार आपके झोली में हमेशा ही बने रहे आपके नाम करीब चालीस एकल प्रर्दशनियां हैं। आपकी कृतियां नागपुर संग्रहालय, अहमदाबाद संग्रहालय, मलेशिया, सिंगापुर, के साथ ही राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय नई दिल्ली में भी सुरक्षित है। आप धर्मयुग, मौज, संदेश, जनशक्ति जैसे कई महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुए हैं। कलाकार अलमेलक जी12 दिसंबर 1982 को सदा के लिए दुनिया छोड़ चले।

लोकोत्तर पराक्रमी, वीर देशभक्त थे महाराणा प्रताप

जयन्ती पर विशेष

शिवकुमार शर्मा
लेखक महिला एवं बाल विकास विभाग में संयुक्त संचालक है।

राष्ट्गौरव महाराणा प्रताप सिंह स्वदेशाभिमान और स्वाभिमान के प्रणपालक मन,वचन और कर्म से क्षत्रियत्व को धारण करने वाले कर्मवीर,धर्मवीर और वंद्यवीर लोकोत्तर पराक्रमी देशभक्त थे। भगवान श्री राम के पुत्र लव के वंशमें तीसरी शताब्दी में कनकसेन राजा हुए ।उन्होंने अपनी पत्नी बल्लभी के नाम पर बल्लभनगर बसाया था ।उनके चार पुत्र चंद्रसेन, राघव सेन, धीर सेन और वीर सेन हुए। चंद्रसेन से'गुहिल'(सिसोदिया वंश) चला। गोहिल वंश सबसे प्राचीन एकमात्र वंश है जिसने एक ही जगह (चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, उदयपुर क्षेत्र)पर 1558 वर्षों तक लगातार शासन किया। मेवाड़ नाम से प्रसिद्ध इस क्षेत्र के प्राचीन नाम शिवि, प्राग्वाट एवं मेदपाट हैं। सिसोदिया वंश की वीरता और शौर्य जग जाहिर हैं। बप्पा रावल जैसे महापराक्रमी, हमीर सिंह और राणा सांगा जैसे वीर शिरोमणि इस कुल में पैदा हुए।इसी वंश में मेवाड़ मुकुट संस्कृति-पालक, अरिदल-घालक, त्यागी,शूरवीर लोकोत्तर पराक्रमी राणा 'कीका' अर्थात महाराणा प्रताप सिंह ने जेष्ठ शुक्ल तृतीया रविवार विक्रम संवत 1597(ई.सन 1504 की 9 मई) को महाराणा उदय सिंह और महारानी जयबन्ता बाई के यहां जन्म लिया। राणा उदय सिंह जब सिंहासनासीन हुए उस समय प्रताप की अवस्था केवल एक माह की थी। उस समय पन्नाधाय ने राणा उदय सिंह की गोद में प्रताप को सौंपते हुए आशीर्वाद दिया था ÷हे मेवाड़ कुल के गौरव,क्षत्रिय कुल पालक धर्म रक्षक! आज मैं तुम्हें पूर्वजों के राज सिंहासन पर बैठा देखकर भाव विभोर हो गई हूं, लो अपनी धाय माता का एक और नजराना (प्रताप को महाराणा उदय सिंह की गोद में रखते हुए)स्वीकार करें। इस मां ने उस रात्रि तुम्हारे लिए अपने पुत्र चंदन का बलिदान किया था परंतु आज मैं उससे भी अधिक प्राणप्रिय के रूप में कीका प्रताप को तुम्हें सौंप रही हूं। यह मेरा आशीर्वाद है कि तुम्हारा यह पुत्र कभी पराजित नहीं होगा और धर्म व धरती की सदा रक्षा करता रहेगा।'धाय माँ का यह आशीर्वाद अक्षरस~' फलीभूत हुआ, इतिहास साक्षी है। महाराणा प्रताप सिंह ने गांव में रहकर जीवन व्यतीत किया इस दौरान भीलों से मित्रता की।कठिन परिस्थितियों कीअग्नि में तप कर कुंदन बन गए।

28 फरवरी 1572 ई. को राणा उदय सिंह का देहांत होने पर सरदारों और अमीर-उमरावों ने गोगूंदा में राणा प्रताप सिंह का राजतिलक कर दिया। 1 मार्च 1572 को 32 वर्ष की आयु में चुनौती पूर्ण परिस्थितियों में महाराणा प्रताप सिंह को सिंहासन मिला। महाराणा प्रताप सिंह ने इस अवसर पर ओजस्वी विचार व्यक्त करते हुए लोगों को मेवाड़ के स्वाभिमान की रक्षा का भरोसा दिया। उपस्थित जन समुदाय ने भी अपना संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि ÷हम सब परमात्मा को साक्षी मानकर सच्चे मन से प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने देश को परतंत्रता की बेड़ी से मुक्त करने के लिए हम अपना सर्वस्व -यहां तक कि स्त्री ,पुत्र तक भेंट करने को तैयार हैं जब तक मातृभूमि को स्वतंत्र न कर लेंगे, जब तक दिल्ली से यवनों की जड़ें न उखाड़ फेंकेंगे तब तक सारे सुख भोग हमारे लिए हराम है हमें पूरा-पूरा विश्वास है कि आप ऐसे योग्य, वीर, साहसी राजा की अधीनता में हम लोग अवश्य सफल होंगे।÷वे मेवाड़ के 13 वे महाराणा हुए।

अकबर ने महाराणा प्रताप सिंह को उसकी अधीनता स्वीकार करने के लिए चार बार दूतमण्डल भेजें। अकबर अपनी शर्तों पर संधि करना चाहता था उसमें से अपमान जनक संधि की शर्त यह थी कि महाराणा प्रताप सिंह अकबर के दरबार में उपस्थित होकर शीश झुकाएं,यह प्रताप ने किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया।नीतिवान, धर्मशील,दृढ़ संकल्पी महाराणा की दृष्टि मेंअपने गौरव, मान-मर्यादा और आत्मसम्मान के आगे जीवन की भी कोई कीमत नहीं है।पं.नारायण जी पुरुषोत्तम 'क्लान्त' अपने लेखन 'प्रतिज्ञा' में लिखते हैं- भूखे मर जाना कट जाना रण खेत में /बन परतंत्र दास म्लेक्ष को कहाऊँ ना /बैर कों विसार कर मोह में फसूं न 'क्लान्त'/प्राण जावे तो भी सिर शाह कों नावांऊॅं ना।।

अकबर ने 18 जून 1576 को मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी हल्दीघाटी में घमासान युद्ध हुआ। अबुल फजल ने अकबरनामा में लिखा है दोनों पक्षों के वीरों ने लड़ाई में जान सस्ती और इज्जत महंगी कर दी ।हल्दीघाटी का युद्ध विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। अपनी छोटी सेना एवं वीर सहयोगियों के साथ अकबर की भारी भरकम सेना जिसमें कई राजपूत राजा भी शामिल थे,से राजपूताने के वीर योद्धाओं ने प्राण पण महाराणा का साथ दिया। 30 वर्षों के संघर्ष और युद्ध के बाद भी अकबर महाराणा प्रताप को न तो बंदी बना सका और न ही झुका सका, जिसका संताप अकबर को ताजिंदगी बना रहा।चरित्र के धनी महाराणा प्रताप नारियों का बहुत सम्मान करते थे। युद्ध में एक बार मुगल सेनापति मिर्जा खां (अब्दुल रहीम खानखाना) के सैन्य बल ने जब समर्पण कर दिया था तो उनके साथ उनकी स्त्रियां और बेगमें भी थी, महाराणा ने उन सभी को सम्मान पूर्वक मिर्जा खां के पास वापस भिजवा दिया। हल्दीघाटी का युद्ध भारतवर्ष की आन बान,शान,स्वतंत्रता और स्वाभिमान का प्रतीक है। महाराणा प्रताप सिंह ने 18 युद्ध जीते। मुगलों की मंशा पर पानी फेरने वाले नर-केहरी महाराणा प्रताप ने केवल क्षत्रिय वंश, राजपूताना या राजस्थान ही नहीं अपितु समूचे हिंदुस्तान का गौरव बढ़ाया। योद्धाओं के प्रेरणा पुंज,सच्चे देशभक्त को समर्पित पं.लोचन प्रसाद पांडे द्वारा लिखे गए 'श्री प्रताप स्तवन'की पंक्तियों का उनके सम्मान उल्लेख करना प्रासंगिक है।÷स्वतंत्रता के प्रिय उपासक कर्मवीर।/ हिंदुत्व गौरव प्रभाकर धर्म्मवीर।।/देशहाभिमान परिपूरित धैर्य -धाम। /राणा प्रताप तब श्री पद में प्रणाम।।

जिस अकबर को बैरम खां ने आड़े वक्त में साथ देकर उसे संरक्षण प्रदान किया, युद्ध लड़े, जिसे वह है आदर पूर्वक खान बाबा कहा करता था उस बैरम खां को षडयंत्र पूर्वक बेरहमी से मरवा दिया और उनकी विधवा से विवाह कर लिया, राव हेमू के मृत शरीर के साथ भी न्याय न करने वाला और स्वतंत्रता की आवाज़ उठाने वाले व युद्धों में मारे गए वीरों के सिरों की दीवार बनाने वाल क्रूर तुर्क,जिसमें राजा या सम्राट होने के कोई गुण विद्यमान नहीं वह अकबर कैसे महान हो गया? भारतवर्ष के भाल को ऊंचा उठाने वाले, इतिहास को उज्ज्वल और गौरवशाली बनाने वाले वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप सिंह को 'महान' कहते वक्त हमारे कथित इतिहासकारों की वाणी और लेखनी दोनों मौन हो गईं? महानता तय करने के मानदंड भी भूल गए?

मुफ्त प्रसारण से उत्साहित हैं गुनाह के निर्देशक

वेब समीक्षा
आदित्य दुबे
(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

जब कोई फिल्म अथवा वेबसिरीज़ किसी मोबाइल ऐप पर मुफ्त देखने को मिले तो उस पर दर्शकीय प्रतिक्रिया क्या होगी यह तो कुछ समय बाद ही पता चलेगा , हाल-फिलहाल तो डिज्नी प्लस हॉटस्टार मोबाइल ऐप पर बोधि ट्री मल्टीमीडिया के बैनर पर तीन जून से सोमवार से शुक्रवार तक प्रसारित होने वाली वेबसिरीज़ -' गुनाह ' के निर्देशक अनिल सीनियर का मानना है कि ,यह शो न्याय, प्रेम, बदले और विश्वासघात के इर्द गिर्द बुना गया है। यह प्रोजेक्ट मेरे दिल के बहुत करीब है। दर्शक इसे डिज्नी प्लस हॉटस्टार मोबाइल ऐप पर मुफ्त में देख पाएंगे इस बात को लेकर हम काफी उत्साहित हैं। इससे पहले ओटीटी पर इसका एक टीजर सामने आया था, जिस पर दर्शकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली थी ।सिरीज़ की कहानी जैन से शुरु होती है, जो तारा (सुरभि) को प्रपोज करता है। मगर रातोंरात उसकी जिंदगी में एक बड़ा तूफान आ जाता है और उस पर किसी के कत्ल का इल्जाम लगता है। तारा उसे जेल भेज देती है और वह सलाखों के पीछे साजिश करने वाले का पर्दाफाश करने की ठान लेता है। फिर जेल में आग लगने के बाद वह भाग जाता है और प्लास्टिक सर्जरी के बाद उसे नया चेहरा और नाम अभिमन्यु (गशमीर महाजनी) मिलता है।

वेबसिरीज़ में अभिमन्यु की मुख्य भूमिका निभाने वाले अभिनेता गश्मीर महाजनी के लिये यह भूमिका निभाना काफी अलग अनुभव था। इस भूमिका में बहुत ज्यादा गहराई है। यह वेबसिरीज़ अभिमन्यु की कहानी बयां करेगी। यह भूमिका गश्मीर महाजनी ने बखुबी निभाई है। शो में धोखा खाने के बाद अभिमन्यू को बदला लेते हुए बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है ?। शो की कहानी इसे आकर्षक और मनोरंजक बनाती है ।उनका यह भी कहना है कि शो के सभी कलाकारों के साथ काम करना मेरे लिए बहुत खुशी की बात थी। शो की अभिनेत्री सुरभि की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा, मैंने सुरभि ज्योति के साथ इस प्रोजेक्ट पर सबसे अच्छा समय बिताया है, वह एक विलक्षण अभिनेत्री होने के साथ, एक बेहतर सह-कलाकार और अच्छी दोस्त भी हैं।सुरभि ज्योति (तारा) ने भी इस शो को लेकर कहा कि शो की कहानी दर्शकों को अपनी सीट से हिलने नहीं देगी। तारा की भूमिका भी अभिमन्यु की तरह ही काफी गहराई भरीऔर मनोरंजक है। वह कहती हैं गश्मीर और जैन के साथ काम करने में मुझे सबसे ज्यादा मजा आया। इस सीरीज में दोनों ने शानदार काम किया है। जैन इबाद खान का भी कहना था कि गुनाह में काम करना मेरे अब तक का सबसे अच्छे निर्णय में से एक था। कहानी सुनने के बाद मैं शिव की भूमिका निभाने के लिए काफी ज्यादा उत्साहित था। वह अपने दोस्तों और परिवार के लिए प्यार से प्रेरित है।शो में बहुत से ऐसे दृश्य हैं जो भावनात्मक रूप से बहुत ज्यादा लोगों को प्रभावित करेंगे। एक अभिनेता के रूप में यह मेरे लिए एक अमूल्य अनुभव भी था।

गुनाह एक रोमांच से परिपूर्ण अपराध कथा है सिरीज है, जो सस्पेंस से भरा होगा। गशमीर महाजनी पहली बार एंटी हीरो बनकर ओटीटी की दुनिया में धमाल मचाने जा रहे हैं। अनिल सीनियर के निर्देशन में बनी सिरीज़ में गशमीर अभिमन्यु की भूमिका निभा रहे हैं। जैन इबाद भी अभिमन्यु बने हैं, जिसे प्लास्टिक सर्जरी के बाद गशमीर का चेहरा मिल जाता है और वह भेष बदलकर सुरभि से बदला लेने वापस आता है।तुर्क के लेखक अय यापिम द्वारा निर्मित प्रशंसित तुर्की नाटक 'एज़ेल' से प्रेरणा लेते हुए, 'गुनाह' एक जटिल कथा बुनती है जो प्यार, दोस्ती और धोखे की पेचीदगियों को उजागर करती है। श्रृंखला अपने पात्रों के मानस में गहराई से उतरती है, अतीत और वर्तमान के बीच निर्बाध रूप से परिवर्तन करती हुई विश्वासघात के जाल को उजागर करती है जो उन्हें एक साथ बांधता है।कथानक मनोरंजक बना हुआ है, कुछ तत्व, जैसे नाटकीय परिवर्तन के लिए प्लास्टिक सर्जरी पर निर्भरता, समकालीन युग में पुराने लग सकते हैं। फिर भी, कलाकारों का शानदार प्रदर्शन, विशेष रूप से महाजनी और खान द्वारा, देखने के अनुभव को बेहतर बनाता है, अपने गहन चित्रण के साथ दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है। सुरभि ज्योति ने तारा की भूमिक बखूबी निभाई है, लेकिन भविष्य के एपीसोड में उनका भूमिका और भी दिलचस्प हो सकती है।

पटकथा लेखक अनिरुद्ध पाठक और निर्देशक अनिल सीनियर ने पूरी कहानी में साज़िश की स्पष्ट भावना बनाए रखते हुए, दोहरी समय रेखाओं को कुशलता से संचालित किया है। अब तक केवल दो एपिसोड प्रसारित हुए हैं, मगर भविष्य में जुड़ने वाले चरित्र और कथानक में मोड़ों है सिरीज़ र भी रोचक हो सकती है । इस लिहाज से वैसे एपीसोडिक रिलीज़ शेड्यूल उत्सुक दर्शकों के धैर्य की परीक्षा ले सकता है, जिन्हें प्रत्येक किस्त का बेसब्री से इंतजार करना होगा। बदला लेने की गाथा के प्रशंसकों के लिए, 'गुनाह' अंधेरे के बीच में एक सम्मोहक यात्रा का वादा करता है। हालाँकि, अभूतपूर्व नवीनता चाहने वालों के लिए, यह नए दर्शकों के लिए दोबारा तैयार की गई एक परिचित कहानी की तरह लग सकता है।

मौसम का बदलता मिज़ाज, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन

पर्यावरण
आरबी त्रिपाठी
लेखक स्तंभकार हैं।

इस बार विश्व पर्यावरण दिवस ऐसे मौके पर आया जब ज्यादातर लोगों ने टकटकी लगाकर 4 जून की ओर देखा। इसी दिन लोकसभा चुनाव के नतीजे आए और 5 जून आते-आते तस्वीर साफ हो जायेगी कि नई सरकार किसकी और उसकी तासीर कैसी होगी। दरअसल पर्यावरण हो या लोगों की रोजी- रोटी का सवाल, गरीबी और बेरोज़गारी, वृक्षारोपण या फिर उनकी निर्मम कटाई, हरे-भरे शहर-गांव या सीमेंट कांक्रीट के जंगल , सारे फैसले सरकारों के हाथों उनके कामकाज के तरीकों, सोच, नज़रिये और उनकी प्राथमिकताओं पर निर्भर होते हैं। प्रचंड गर्मी में तापमान बढ़ जाने से लोग हलाकान है तो सियासी पारा भी गजब ढा रहा है।उधर अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया के 250 करोड़ श्रमिक पर्यावरण जनित तापमान वृद्धि के शिकार हो सकते हैं। हमारे देश में तकरीबन 45 से 60 करोड़ असंगठित क्षेत्र में मज़दूर हैं । तापमान वृद्धि का सबसे ज्यादा असर गरीबों खास तौर पर किसानों और दिहाड़ी मजदूरों पर पड़ता है ।

जहाँ तक पौधे लगाने, उनकी हिफाज़त और देखरेख करने और पेड़ों की अंधाधुंध कटाई रोकने की बात है तो आजकल यह देखा-देखी कर्मकांड बनता जा रहा है । अब कोई सुन्दर लाल बहुगुणा नहीं है जो चिपको आंदोलन जैसी मुहिम चला सके। संतोष की बात यह है कि आज भी कुछ पर्यावरण प्रेमी हैं जो अपने तई ' पर्यावरण संरक्षण के पहरुए ' के रूप में चुपचाप अपना काम कर रहे हैं । ज्यादा दूर नहीं भोपाल की ही बात करें तो यहाँ शाहपुरा स्थित बाल हनुमान मंदिर के आसपास ढलाननुमा पहाड़ी पर प्रेरणादायी काम किया जा रहा है। यहां कुछ लोग बाल्टी, बड़ी जॉर और बोतलों में पानी लेकर भरी गर्मी में पौधों को पानी देते नजर आते हैं। बगैर किसी प्रचार की चाह रखे इनमें से ज्यादातर सीनियर सिटीजन हैं। अन्य जगहों पर भी ऐसे पहरुए निश्चित ही होंगे। सो, पर्यावरण संरक्षण को फैशन नहीं बल्कि पैशन बनाने की जरूरत है।

इस बीच कुछ चौंकाने वाली रिपोर्ट सामने आई है। केन्द्रीय जल आयोग की रिपोर्ट के हवाले से बताया गया है कि देश के प्रमुख जलाशयों की जल संग्रहण क्षमता गिरकर 25 प्रतिशत हो गई है। देश के तकरीबन डेढ़ सौ जलाशयों में संग्रहण क्षमता में बीते साल की इसी अवधि की तुलना में कमी परिलक्षित हुई है। उधर मीडिया रिपोर्ट की मानें तो दक्षिण भारत के जलाशयों में जल स्तर पिछले साल की तुलना में लगभग 46 प्रतिशत कम रह गया है। आईटी केन्द्र बेंगलुरू का जल संकट सर्वविदित है। भोपाल की पहचान बड़े तालाब ने अपने किनारे छोड़ दिये और दिनोंदिन जल स्तर घटता नजर आ रहा है। आखिर नर्मदा पर निर्भरता कब तक और यह नदी कितनों की प्यास बुझायेगी। प्रदेश के अनेक स्थानों से पानी के संकट की खबरें अखबारों की सुर्खियाँ बन रही है। ऐसे में मानसून की समय पर आमद की सम्भावना उम्मीद जगाती है।

उधर उत्तराखंड के जंगलों में आग धधकने से इस साल तकरीबन 1500 हैक्टेयर जंगल जलकर राख हो जाने की ख़बर पर्यावरण और वन संरक्षण के लिहाज से बहुत बुरी ख़बर है। बीते 16 मई को एकाएक जंगल फिर धधक उठे इससे लगभग 546 हैक्टेयर जंगल को नुक़सान पहुंचने के साथ 6 लोग मारे गये। इस मामले ने इतना तूल पकड़ा कि सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कीमती जंगलों को आग के खतरों से बचाया जाना चाहिये। सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने कहा कि हर किसी की दिलचस्पी केवल जंगलों की रक्षा में है ।

उत्तराखंड एक और वजह से सुर्खियों में बना रहा वो है चार धाम यात्रा। विपरीत मौसम और बड़ी तादाद में श्रद्धालुओं के पहुंचने से मई की शुरुआत में ही वाहनों का लम्बा जाम लग गया था। मीडया रिपोर्ट के मुताबिक वहां कई लोगों की मौत भी हुई इनमें मध्यप्रदेश के श्रद्धालुजन शामिल हैं। मुश्किलों का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बड़ी संख्या में श्रद्धालु बीच रास्ते फसे वाहनों में रात बिताने को विवश थे। इसके चलते यात्रा का ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन बंद कर दिया गया और अनेक यात्रिकों को वापस भी लौटना पड़ा। दरअसल कतिपय लोगों ने तीर्थों और धर्म स्थलों की पवित्र यात्रा को भी पर्यटन जैसा बना लिया है जहां वे परिवार समेत छोटे बच्चों को भी लेकर जाते हैं और लग्जरी सुविधाओं पर अनाप-शनाप खर्च करते हैं। इस समय देश में धार्मिक भावनाएं ऊफान पर हैं, होना स्वाभाविक है लेकिन यह जान जोखिम में डालकर हरगिज नहीं हो सकती।

मध्यप्रदेश से लेकर राजस्थान, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ , जम्मू-कश्मीर या फिर अन्य दूसरे राज्य, मौसम के बदलते मिज़ाज और फसल चक्र पर इसके प्रभाव से शायद कोई अछूता रहा हो। सोचें,किसान की मेहनत पर जब पानी फिर जाये तब उन पर क्या बीतती होगी? ऐसे में वो सड़कों पर नहीं उतरेंगे तो क्या करेंगे। उधर हाल ही में मुंबई में तेज आंधी तूफान और बारिश के चलते बड़े आकार के होर्डिंग के ढह जाने की घटना में 17 लोगों की मौत और अनेक लोगों के घायल हो जाने से होर्डिंग्स लगाने की नीति और अनुमति पर सवाल उठाए गये जो जरूरी थे। अवैध रूप से बगैर अनुमति के ऐसे होर्डिंग मुंबई में ही नहीं बल्कि अधिकांश बड़े छोटे शहरों में, राजमार्गों और पेट्रोल पंपों पर भी लगे देखे जा सकते हैं लेकिन हमारे यहाँ यह सब सिस्टम में शामिल है जिसे रोकना आसान नहीं है। गुजरात का राजकोट हो या राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली या दूसरी अन्य जगह मासूम बच्चों की मौत झकझोर देने वाली है लेकिन जिम्मेदारों को कहां फर्क पड़ता है।

बीती मई के अंतिम सप्ताह के पहले ही तापमान अपना रंग दिखाने लग गया और भोपाल में भी यह 45 डिग्री सेल्सियस को पार कर गया। राजस्थान के फलौदी 9और चुरू में तापमान ने रिकॉर्ड हाफ सेंचुरी लगा दी तो मध्यप्रदेश के पृथ्वीपुर में पारा 48.7 डिग्री को छू गया।पाकिस्तान की सीमाओं से आतंक ही नहीं बल्कि दूसरी मुश्किलें भी घुसपैठ करती रही है। सो, पाकिस्तान से आने वाली गर्म हवाओं का असर ना केवल राजस्थान और मध्यप्रदेश बल्कि दूसरे अन्य राज्यों पर भी पड़ा और इससे अनेक स्थानों पर पारा 42 से 48 डिग्री तक पहुंच गया जो आने वाले वक्त के लिये अलार्मिंग कहा जा सकता है।

पर्यावरण संरक्षण इतना व्यापक विषय बन गया है कि इस आलेख में हम ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, एसी के बढ़ते चलन के दुष्प्रभाव, वाहनों के धुंए से उगलने वाले जहर और प्रेशर हॉर्न से मानव स्वास्थ्य पर पढ़ने वाले बुरे असर की चर्चा प्रतीकात्मक रूप से कर पा रहे हैं।

पृथ्वीपुर में 28 मई को भी पारा 48.5 डिग्री. राजस्थान के चुरू में पारा 50.5 डिग्री 28 मई को. सेन्टर फार एनवायरमेंट की स्टडी में कहा गया है कि कांक्रीट सीमेंट से कई शहरों में वास्तविक से 9 डिग्री ज्यादा गर्मी पड़ रही है। हरियाली घट रही है और कांक्रीट के ऊंचे भवन दोगुनी रफ्तार से बढ़ रहे हैं।

रेमल चक्रवात के प्रभाव से उत्तर पूर्व के 6 प्रदेशों में बाढ़ के हालात बन गये हैं। इनमें असम,व मेघालय, मणिपुर, नगालैंड , मिजोरम और सिक्किम शामिल है। बाढ़ और भूस्खलन से जान माल की क्षति हुई है।

इधर कट रहे जंगल, उधर रेत परिवहन की कार्यवाही पर व्यस्त रेंजर

बैतूल/भैंसदेही। जंगल कट रहे है और रेंजर का रेत परिवहन की ओर ध्यान है। जिसका वन माफिया पूरा-पूरा फायदा उठा रहे है। हालात यह है कि वन माफिया सागौन सहित अन्य बेशकीमती पेड़ों को निशाना बना रहे है। रेत परिवहन पर कार्यवाही में भी रेंजर की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो रहे है। उन्होंने जिन ट्रैक्टरो पर कार्यवाही की है, उन ट्रैक्टरों के मालिक का कहना है कि रेत की उनके पास बकायदा रॉयल्टी मौजूद है। वन विभाग ने जो ट्रैक्टर पकड़े है, वह वन विभाग के क्षेत्राधिकार मे भी नहीं था। राजस्व क्षेत्र से ट्रेक्टरों को रेंजर ने पकडक़र बिना किसी दस्तावेज को देखे, अनुचित कार्रवाही की है। जिसकी ट्रेक्टर मालिक ने शिकायत भी की है।

बताया जा रहा है कि वन विभाग द्वारा कुछ दिनों पहले ट्रैक्टर पकड़ थे। ट्रेक्टर मालिक रमेश पिता देवीसिंह नरवरे का कहना है कि जिन ट्रेक्टरों पर अवैध रेत परिवहन की कार्यवाही भैंसदेही रेंजर द्वारा की गई है, उन ट्रैक्टरों में भरी रेत की रायल्टी उनके पास मौजूद है। दोनों ट्रैक्टरों की रायल्टी होने के बावजूद भी रेंजर ने द्वेषपूर्ण कार्यवाही की है। जिसकी शिकायत जिला कलेक्टर, एसडीएम सहित अन्य अधिकारियों से की है। ट्रैक्टर मालिक रमेश नरवरे का आरोप है कि उनके पास सभी दस्तावेज मौजूद होने के बाद भी रेंजर ने जबरदस्ती कार्रवाई की है। उनके ट्रैक्टर चालक श्याम अखंडे और विजय छितकारे को रोका और उनके साथ जोर जबरदस्ती-मारपीट की गई। गाली-गलौज कर अपशब्दों का प्रयोग भी किया गया। फॉरेस्ट ऑफिस लाकर ड्राइवरों को बंद कर दिया गया। ट्रेक्टर मालिक ने रेंजर पर अवैध रुपये मांगने का भी आरोप लगाया है। आवेदक ट्रेक्टर मालिक ने अधिकारियों को ज्ञापन सौंपकर उक्त मामले की सूक्ष्मता से जांच कर उचित कार्यवाही किये जाने की मांग अधिकारियों से की है।

इनका कहना है

रेत वाले मामले की अभी जांच चल रही है। पेड़ काटने वाली जो बात है इसकी जानकारी मुझे व्हाट्सएप कर दीजिए, इसकी भी हम जांच करवायेंगे।

विजयानंतम टीआर,
डीएफओ, दक्षिण वन मंडल बैतूल

मेरे पास रेत की रायल्टी है। सभी दस्तावेज पूर्ण होने के बाद भी रेंजर द्वारा जबरन मामला बनाया है। इसकी शिकायत की है।

- रमेश नरवरे, ट्रेक्टर मालिक

वाहन छोड़कर भागा तस्कर, 1 लाख से अधिक की सागौन सहित वाहन जप्त

वन माफियाओं के खिलाफ डीएफओ के नेतृत्व में की जा रही ताबड़तोड़ कार्रवाई

बैतूल। दक्षिण वन मंडल ने वन माफिया के खिलाफ कार्यवाही जारी रखते हुए वन मंडल की गश्ती टीम द्वारा 7 जून को सावलमेंढा वन परिक्षेत्र में अशोक लिलेण्ड, आरएलएस वाहन (एमएच 40 सीएम 7136) को सागौन वनोपज की अवैध तस्करी करते हुए पकड़ा। इस कार्यवाही में वन विभाग की टीम को बड़ी सफलता मिली। तस्कर वाहन छोड़कर भागने पर मजबूर हुए। डीएफओ विजयानन्तम टी.आर. के मार्गदर्शन और वन परिक्षेत्र अधिकारी मानसिंग परते के नेतृत्व में

जामूलनी से धाबा मार्ग पर सुबह 6 बजे संदिग्ध वाहन को रोका गया। वाहन चालक ने तेजी से वाहन को बहिरम की ओर भगाया, परन्तु गश्ती टीम के पीछा करने पर वह संतरे के बगीचे में वाहन छोड़कर भाग गया। तलाशी के दौरान वाहन में 22 नग सागौन चरपट (1.996 घनमीटर) पाई गई, जिसकी अनुमानित कीमत 1,10,592 रुपये आंकी गई है। आरोपी के विरुद्ध वन अपराध पंजीबद्ध किया गया और प्रकरण की विवेचना जारी है। इस कार्यवाही में मानसिंग परते, देवीराम उईके व.पा. पी.एस. धावा, रमेश महस्की व.पा. पी.एस. थोड़ा, गौरव कुमार जैन वन रक्षक, श्री प्रकाश चौहान वन रक्षक आदि की अहम भूमिका रही। दक्षिण वन मंडल बैतूल के डीएफओ विजयानन्तम टी.आर. ने बताया कि हमारी गश्ती टीम की लगातार सफलता से वन माफियाओं में हड़कंप मच हुआ है। वन विभाग की इस सतत और सख्त कार्यवाही से अवैध तस्करी के मामलों में कमी आ रही है। वन विभाग का यह प्रयास, वन संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इससे क्षेत्र में वन माफिया पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।

नगरपालिका पहुंचकर पानी के लिए महिलाओं ने किया प्रदर्शन

लोहिया और राजेंद्र वार्ड के लोगों को 8 दिनों से नहीं मिला पानी

बैतूल। नगर पालिका बैतूल द्वारा पेयजल की सप्लाई ठीक ढंग से नहीं हो पा रही है। ताप्ती बैराज के पास टूटी पाइप लाइन कल दोपहर बाद सुधरी थी जिससे आज कुछ वार्डों में पेयजल की सप्लाई गई है। विगत लगभग 8 दिनों से लोहिया और राजेंद्र वार्ड के लोगों को पानी नहीं मिलने से इन वार्डो की गुस्साई महिलाओं ने नगर पालिका पहुंचकर जमकर नारेबाजी व प्रदर्शन किया और वहां के कर्मचारीयों, अधिकारियों को खूब खरी-खोटी सुनाई। महिलाओं ने बताया कि ओझाढाना, शिव मंदिर के पीछे और शहीद कालोनी के आसपास के क्षेत्र में बीते 8 दिनों से पानी नहीं मिल पा रहा है। इस दौरान नगर पालिका बैतूल के परिसर मे बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद थीं।

पानी न होने से बड़ी दिक्कत, परेशान हो गई महिलाएं- महिलाओं ने बताया कि 8 दिन से वार्ड में पानी नहीं मिला है, जिसके चलते हमें बहुत ही दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। हम सब गरीब तबके के लोग हैं, हमें रोज मजदूरी के लिए काम पर भी जाना पड़ता है, तब कही जाकर परिवार पाल पाते हैं, वहीं हमारे वार्ड में एक हैंडपंप था जिस पर वार्ड के ही कुछ दबंग लोगों ने कब्जा कर उसमें अपना पाइप डाल लिया है जिसके कारण हमें पानी नहीं मिल पा रहा है। पीने का पानी के लिए भी महिलाओं को दूर से लाना होता है।

हैंडपंप से हटाया जाएगा कब्जा - इधर नगर पालिका बैतूल सीएमओ ओमप्रकाश भदोरिया ने इस शिकायत पर जानकारी देते हुए बताया कि तत्काल नगर पालिका के कर्मचारियों को वहां भेजा जा रहा है, जो मौके पर जाकर देखेंगे, अगर इस तरह की स्थिति है तो उस हैंडपंप से कब्जा हटाया जाएगा और वार्डवासियों को पानी भी जल्दी ही उपलब्ध कराया जाएगा।

पानी के लिए भटकने को ऐसे मजबूर हो रहे हैं बैतूल निवासी

जिले में पानी की किल्लत शुरू हो चुकी है। आलम ऐसा है कि बैतूल जिले में भीषण गर्मी के इस दौर में लोगों को पानी की समस्या से जूझना पड़ रहा है। जिला मुख्यालय से लगभग 40 किमी दूर पर बसे खोदरी गांव में गर्मी की दस्तक के साथ बड़ा जलसंकट शुरू हो गया है। एक हजार की आबादी वाले इस गांव में 700 फीट गहरे बोरवेल से आधा इंच पानी आ रहा है। इससे गांव वालों को पानी भरने अपनी बारी का इंतजार करना पड़ता है।

पीने के पानी के लिए आपस में झगड़ा- पानी की किल्लत से मोहल्ले वाले परेशान है। कहीं कोई सुनवाई नहीं हो रही। शासन-प्रशासन ने वादा किया था कि हैंडपंप लग जाएगाए लेकिन हालात अब भी जस के तस है। जिले की ग्रामीण महिलाओं के मुताबिक कई बार पानी के लिए आपसी झगड़े हो जाते है। तो कई बार छोटे बच्चों को घरों में रोता बिलखता छोड़कर रात के अंधेरे में पानी भरना पड़ता है। खोदरी गांव में ज्यादातर आबादी ऐसी है जिसमें रोज कमाने-खाने वाले लोग रहा करते हैं, इन्हें पानी की समस्या से अक्सर परेशान रहना पड़ता है।

गांव वालो से मिली जानकारी के अनुसार इस गांव में 8 से 10 दिन में ये बोरवेल भी साथ छोड़ देगा, जिसके बाद 5 किमी दूर से पानी लाने को मजबूर होना पड़ेगा। गांव में 4 हैंड पंप है, उसमें से दो बंद पड़े हैं और जो चालू है, वह भी गांव से बाहर है। एक 700 फीट वाला बोरवेल ही गांव का एकमात्र सहारा है। इस इकलौते बोरवेल पर भीड़ का नजारा देख कर आप अंदाजा लगा सकते है यहां पर पानी को लेकर किस तरह हाहाकार मचा हुआ है।

जनहित में ध्यान देने की सोशल मीडिया पर गुहार..

नर्मदापुरम। सोशल मीडिया पर आज जनहित में निवेदन करने वाली एक पोस्ट पढ़कर महसूस किया जा सकता.? केंद्र सरकार का प्रतिनिधितत्व करने वाले अधिकारी दायित्व निर्वहन करने में पीछे है जबकि केंद्र सरकार के प्रतिनिधित्व करने वाले अधिकारी को दायित्वों के प्रति सजग रहना जरूरी ही नहीं उनकी नागरिकों के प्रति जवाबदेही है.. साथ ही उन्हें सजग रखने वाली एजेंसियों का दायित्व है कि वे उन्हें दायित्व निर्वहन में मदद करें पर समझ आता है कि उन्हें सजग रखने वाली एजेंसियां ठीक मदद नहीं कर रहीं..? सोशल मीडिया पर शिव मोहन सिंह ने अखबार की एक कटिंग के साथ कलेक्टर महोदय से जनहित में आग्रह किया वह अनुचित नहीं लगती । पर इस आग्रह से सवाल जरूर उठता है कि सजगता के लिए उन्हें आखिर सोशल मीडिया का सहारा क्यों लेना पड़ा.. ! ऐसे काफी मामले होते हैं जिन पर अधिकारी ध्यान नहीं दे पाते तो उन्हें सजग रहने वाली एजेंसियां एलर्ट करती है। जो पीछे चल रही। आखिर जनहित में ध्यान आकर्षित करने वाली खबरों पर अधिकारियों का ध्यान नहीं दिया जाना या ध्यान नहीं देना कारण क्या हो सकता। यह चिंतन का विषय है। इटारसी में खाद्य विभाग से संबंधित उनके कार्य क्षेत्र में की जा रही कार्रवाई के समाचार प्रकाशित हो रहे हैं उस पर शिव मोहन सिंह ने अधिकारी का ध्यान जनहित में आकृष्ट करना चाहा। कि मुख्यमंत्री माननीय मोहन यादव की इच्छा अनुसार सुशासन स्थापना में आम जनता के हित में इसी प्रकार का अभियान पूरे जिले में विशेष कर नर्मदा पुरम मुख्यालय पर प्रारंभ करने हेतु संबंधित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी को निर्देशित करने का निवेदन करते हेतु अधिकारी के संज्ञान में लाना उचित समझा जिसमें उन्होंने बनखेड़ी में उनके द्वारा स्वयं एक होटल पर एक्सपायरी डेट की कोल्ड ड्रिंक डिस्पोज ऑफ़ करवाई, जो खाद्य विभाग का काम था। जिला खाद्य अधिकारी का ध्यान आकर्षित करने के लिए उन्होंने दो-तीन बार फोन किया लेकिन व्यस्तता के कारण वह फोन नहीं उठा सकी इसलिए उन्होंने सोशल मीडिया पर सीधे जनहित में अधिकारी से अनुरोध किया है। चर्चा का विषय बन गया।

नमामि गंगे अभियान की शुरुआत जोश खरोश से..

नर्मदापुरम। नमामि गंगे अभियान के तहत आज नगरपालिका ने गर्मजोशी के साथ इस अभियान को नर्मदा घाट से प्रारंभ किया। निश्चित इस अभियान की शुरुआत जोश खरोश से हुई लेकिन अभियान के क्रियान्वयन का आम जनता पर क्या प्रभाव पड़ेगा..? इस विषय पर अभियान में भाग लेने वाले अधिकारी कर्मचारियों ने तो ध्यान ही नहीं दिया..? एक ही स्थान पर बारी-बारी से चेहरे बदल कर केवल झाडू लगाकर अभियान शुरू करना प्रर्दशन तक सीमित दिखना खानापूर्ति कही जा सकती, इसमें भी मजेदार बात यह है कि प्रसिद्ध नर्मदा घाट हमेशा आखिर इतना गंदा क्यों जबकि इसे साफ सुथरा बनाने के लिए सही तरह के संगठन आए दिन इसे झाड़ बुहार जाते। फिर नदी सफाई अभियान का कुछ एक संगठन तो बाकायदा सालों से प्रति सप्ताह टीम के साथ अभियान चलाकर सेवा करते आ रहे.. ! अखबारों तक सीमित रहने वाले जनहितैषी योजनाओं का ये बीमार ऐसे ही पलीता लगाकर जन चर्चा का विषय बना देते जो खानापूर्ति कहलाते। उसी श्रंखला में आज खुद मुख्य नगरपालिका अधिकारी ने नमामि गंगे अभियान की शुरुआत नर्मदा घाट पर हाथों में दास्तानें और शूज पहन कर नदी से पालीथीन निकाल फोटो सेशन से शुरूआत की और उनके स्टाफ ने उपर तिलक भवन से लगभग एक होर्डिंग के पास बारी-बारी झाड़ बुहार फोटो सेशन करा कर नो दिवसीय कार्यक्रम की हवा पहले ही दिन निकाल डाली। सफाई कर्मचारी यहां सवाल कर रहे जब मुख्य नगरपालिका अधिकारी हाथों में दास्तानें और शूज पहन कर अभियान की शुरुआत करती है तब उन्हें यही आभास अपने सफाई मित्र कहे जाते सफाई कर्मियों के प्रति क्यों नहीं जागता.. कि उन्हें भी दस्ताने और बूट बतौर सुरक्षा की दृष्टि से पहनाएं जाएं।

बैतूल की माचना नदी और मुलताई के ताप्ती सरोवर पर लोगों ने किया श्रमदान

बैतूल। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत शनिवार को बैतूल की माचना नदी और मुलताई के ताप्ती सरोवर की साफ-सफाई की गई। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने बताया कि कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन के निर्देश पर जिले के सभी विकास खंडों में तालाब, बावड़ी गहरीकरण, नदी, नालों की सफाई, ऐतिहासिक एवं पारंपरिक जल संरचनाओं के संरक्षण, पुनर्जीवन के लिए जिले में आगामी 16 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के माध्यम से जनमानस को जल संवर्धन और संरक्षण के लिये प्रेरित किया जा रहा है।

ताप्ती सरोवर घाट पर प्रतिदिन हो रही सफाई- जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत मुलताई में नगर विकास प्रस्फुटन समिति राजीव गांधी वार्ड के अध्यक्ष एवं एमएसडब्ल्यू के छात्र नारायण देशमुख, सदस्यों सहित गायत्री परिवार के सदस्यों के द्वारा मां ताप्ती सरोवर के घाटों की लगातार तीन दिनों से सफाई की जा रही है। प्रतिदिन सुबह 7 बजे से 8 बजे तक मां ताप्ती सरोवर के घाटों की सफाई के लिए एक घंटे का श्रमदान सभी समाजसेवियों के द्वारा किया जा रहा है।

बैतूल की माचना नदी की साफ-सफाई- मप्र जन अभियान परिषद की जिला समन्वयक श्रीमती चौधरी ने बताया कि जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत बैतूल ब्लॉक के माचना नदी मलकापुर में नवांकुर संस्था प्रदीपन संस्था, प्रत्याशा महिला एवं बाल उत्थान समिति, भूपेन्द्र ग्राम उत्थान समिति के द्वारा लगातार स्वच्छता अभियान जारी हैं। अभियान के दौरान नदी की सफाई की गई। इस दौरान बड़ी मात्रा में नदी से कचरा निकाला गया।

जल गंगा संवर्धन अभियान

ग्रामीणों ने घुटीगढ़ में ताप्ती नदी घाट पर की सफाई

बैतूल। जल स्त्रोतों के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए 05 जून से 16 जून तक चलाए जा रहे जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत शनिवार को बैतूल ब्लॉक के ग्राम घुटीगढ़ में ताप्ती नदी में ग्रामीणों ने श्रमदान किया। ताप्ती नदी के घाट की साफ-सफाई एवं घाट के किनारे साफ-सफाई की गई। नदी में से कचरा निकालने के साथ ही गहरीकरण का कार्य किया गया। इसके बाद ताप्ती नदी के घाट पर सामूहिक रुप से संध्या आरती का आयोजन किया गया। पं.नीरज तिवारी हनुमानजी महाराज एवं समस्त क्षेत्रवासियों श्री शनिधाम ताप्ती जी के सौजन्य से भंडारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अभियान में ग्रामीणों के द्वारा सहभागिता दर्ज की गई। अभियान के दौरान पं.नीरज तिवारी, सरपंच श्री हंसराज मर्सकोले, समस्त पंचगण, उपयंत्री, सचिव एवं ग्राम रोजगार सहायक उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि प्रदेश सहित बैतूल जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान 16 जून तक चलाया जा रहा है। जल गंगा संवर्धन अभियान में नदी, नालों और ऐतिहासिक एवं पारम्परिक जल संरचनाओं, तालाब, झील, कुआं, बावड़ी आदि के संरक्षण, पुनर्जीवन के कार्य किए जा रहे है।

जल गंगा संवर्धन अभियान के दूसरे दिन चला श्रमदान

नगर पंचायत के कर्मचारियों की उत्कृष्ट भागीदारी

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

जल गंगा संवर्धन अभियान के दूसरे दिन भी श्रमदान के अंतर्गत पलकमती नदी के लिपटे,घाट के अलावा प्राचीन बावड़ी वाले में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अवसर पर नगर पंचायत परिषद के अधिकारियों के अलावा कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। वहीं जल गंगा संवर्धन अभियान की बैठक 6जून की बैठक आहूत की गई थी। जिसमें जन-मानस के अलावा जनप्रतिनिधि भी उपस्थित थे। किन्तु आज जो जल गंगा संवर्धन अभियान दूसरे दिन हुआ। उसमें नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटैल, समाजसेवी संजीव शुक्ला, वकील शिवकुमार पटैल,तिलक वार्ड पार्षद शकुन बाई सराठे के अलावा नगर पंचायत परिषद के आर जी चौबे, संजय परसाई, अमित परसाई, प्रदीप दुबे, संजय पचौरी ,हक्कूलाल परते,रजनी ठाकुर, प्रीति पारधी, दीपिका रघुवंशी, राधेश्याम रघुवंशी, नरेंद्र धुर्वे , सूर्यनारायण पथारिया लक्ष्मी नारायण मालवीय,अपूर्व सरोज,नीरज मलैया, दीपक डोंगरे, श्यामल डे , जय सिंह राजपूत उत्सव जायसवाल ,रणधीर रघुवंशी अनिल रघुवंशी प्रहलाद किरार राजेश रघुवंशी, राजेश मौर्य, अशोक कुशवाहा ,भूपेंद्र केवट, हरगोविंद व्यास, हुकुमचंद मेहरा ,कपिल सोनी ,प्रबुद्ध दुबे, प्रवेश ठाकुर आदि नगर पंचायत परिषद के कर्मचारियों ने श्रमदान करके झाड़ू लगाकर कचरा उठाने का कार्य किया। अभियान के दूसरे दिन जन मानस की उपस्थिति कम रही।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत बिलावली तालाब पर किया गया श्रमदान

देवास। बिलावली तालाब गहरीकरण के कार्य में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल संचय को लेकर नगर निगम द्वारा महापौर गीता दुर्गेश अग्रवाल, विधायक प्रतिनिधि दुर्गेश अग्रवाल के साथ वार्ड के पार्षद व निगम राजस्व समिति अध्यक्ष जितेंद्र मकवाना एवं जनप्रतिनिधि एवं सामाजिक संस्था रहवासी और गणमान्य नागरिकों द्वारा श्रमदान किया गया। तालाब का गहरीकरण करने का कार्य रहवासी गणों एवं किसान भाइयों द्वारा अपने संसाधनों से किया जा रहा है। गहरीकरण होने से बारिश का पानी अधिक संचय होगा जिससे तालाब में पानी भरा रहने से ट्यूबवेल भी रिचार्ज होंगे। उक्त तालाब में महापौर गीता अग्रवाल विधायक प्रतिनिधि दुर्गेश अग्रवाल सामाजिक संस्था निगम अधिकारी एवं कर्मचारियों और रहवासी ,नागरिकों के द्वारा श्रमदान भी किया गया। महापौर गीता अग्रवाल ने बिलावली में उपस्थित गणमान्य नागरिकों रहवासी और किसान भाइयों को कहा कि अपने-अपने भवन पर रूफ हार्वेस्टिंग सिस्टम अवश्य लगावे, रूफ हार्वेस्टिंग सिस्टम लगवाकर ट्यूबवेल में जल स्त्रोत बढ़ाने का कार्य करें । विधायक प्रतिनिधि श्री अग्रवाल ने बताया कि तालाब का गहरीकरण का कार्य प्रगति पर है आज इसमें श्रमदान किया गया है । वर्षा काल में इसके आसपास बड़ी मात्रा में पौधारोपण भी किया जाएगा यह बात बिलावली स्थित ग्राम रहवासी और किसान भाइयों को बताई किसान भाइयों को यह भी बताया कि अपने खेतों , मेड पर अधिक से अधिक संख्या में पौधारोपण करें।

विश्व समुद्र दिवस पर व्याख्यान, मानव श्रृंखला के साथ जल संरक्षण की शपथ का आयोजन

देवास। 10 एमपी बटालियन एनसीसी उज्जैन के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल ज्ञानप्रकाश चौधरी के मार्गदर्शन एवं निर्देशानुसार पुनीत सागर अभियान के अंतर्गत दिनांक 8 जून 2024 को श्रीकृष्णाजीराव पवार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय देवास और स्वर्गीय तुकोजीराव पवार शासकीय विज्ञान महाविद्यालय देवास की एनसीसी इकाइयों द्वारा विश्व समुद्र दिवस पर व्याख्यान,मानव श्रृंखला के साथ जल संरक्षण की शपथ का आयोजन प्रभारी प्राचार्य डॉ एस पी एस राणा की उपस्तिथि में किया गया।

विषय विशेषज्ञ के रूप में के पी कॉलेज के भूगोल विषय के प्राध्यापक डॉ कैलाश यादव द्वारा समुद्र की महत्ता, वैश्विक स्तर पर समुद्र का फैलाव, एवं उनके संरक्षण के साथ ही उसके महत्व को विस्तार पूर्वक कैडेट्स एवं विद्यार्थियों को बताया गया। डॉ सीमा सोनी द्वारा विद्यार्थियों को जल का सदुपयोग करने तथा वैश्विक स्तर पर समुद्री पर्यावरण को स्वस्थ रखने के आज की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। डॉ सोनी ने अपने उद्बोधन ने कहा कि *जल है तो कल है हमें जल की महत्ता को समझना चाहिए और जल के अव्यय को रोकने के लिए अपने आस पड़ोसियों को भी समझने की आवश्यकता है*। डॉ संजय सिंह बरोनिया द्वारा विद्यार्थियों को समुद्र में बढ़ रहे प्रदूषण एवं उससे समुद्री जीवों को होने वाले नुकसान के विषय में जानकारी दी गई साथ ही उन्होंने यह बताया कि हमारी जीवनदायनीऑक्सीजन का प्रतिशत ज्यादा मात्रा में हमें समुद्र से प्राप्त होता है और समुद्रों का स्वस्थ रहना पृथ्वी के लिए अत्यंत आवश्यक हैद्य

लेफ्टिनेंट डॉ संजय गाडगे द्वारा इस अवसर पर कैडेट्स एवं विद्यार्थियों को जल संरक्षण की शपथ दिलवाई गई और सभी कैडेटों को वृक्षारोपण कर वर्षा के जल का संरक्षण करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के आयोजन में इको क्लब प्रभारी प्रो जितेंद्र सिंह राजपूत, रा से यो कार्यक्रम अधिकारी प्रो राकेश कोटिया का सराहनीय सहयोग रहा। इस अवसर पर मुख्य रूप से डॉ आर के मराठा सुश्री निधि नामदेव आदि के साथ एन सी सी कैडेट्स, विद्याथी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कैप्टन डॉ संजय सिंह बारोनिया द्वारा किया गया । आभार डॉ संजय गाड़गे ने माना ।

भड़कीं कंगना इंडस्ट्री के जो लोग जश्न मना रहे

बॉलीवुड एक्ट्रेस कंगना रनौत लगातार सुर्खियों में बनी हुई हैं। मंडी से सांसद बनी कंगना को गुरुवार दोपहर चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर एक सीआईएसएफ महिला कांस्टेबल ने थप्पड़ मार दिया था। इसके बाद एयरपोर्ट पर घमासान मच गया। दरअसल महिला सुरक्षाकर्मी कंगना रनौत के किसान आंदोलन के दौरान दिए गए बयान को लेकर आहत थी। इस घटना के बाद कंगना रनौत ने अपनी स्टेटमेंट जारी करते हुए कहा था कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि पंजाब में किस तरह से आतंकवाद और उग्रवाद को खत्म किया जाएगा। इस बीच कंगना रनौत ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल से एक पोस्ट शेयर की, जिसमें एक्ट्रेस फिल्म इंडस्ट्री के लोगों पर भड़कती नजर आ रही हैं।

इस पोस्ट में कंगना रनौत कह रही हैं कि प्रिय फिल्म इंडस्ट्री या तो आप सभी लोग एयरपोर्ट पर मुझ पर जो अटैक हुआ, उस पर जश्न मना रहे होंगे या फिर इस पर चुप्पी साधे हुए हैं। लेकिन, याद रखना अगर कल को आप अपने देश में किसी सड़क पर या फिर दुनिया में कहीं भी चल रहे होंगे तब कोई इजरायली या फिर फिलिस्तानी आप या आपके बच्चे पर हमला करते हैं, वो भी बस इसलिए क्योंकि आप सभी राफा के लिए खड़े थे। इजरायली होस्टेज का समर्थन कर रहे थे। तब आप देखना मैं आपकी बोलने की आजादी के लिए लड़ूंगी। अगर किसी दिन आपको लगे कि मैं क्यों, मैं कहां हूं तो याद रखना आप मैं नहीं।

इसके अलावा कंगना रनौत ने एक और पोस्ट किया है। जिसमें उन्होंने लिखा है, अब सभी निगाह राफा गैंग की तरह है, यह आपके और आपके बच्चे के साथ भी हो सकता है। जब आप किसी पर आतंकवादी हमले को सेलिब्रेट करते हैं तो उस समय के लिए तैयार हो जाएं कि यह घटना आपके साथ भी हो सकती है। कंगना रनौत के इस पोस्ट पर लोग खूब कमेंट कर रहे हैं और अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। एक्ट्रेस कंगना रनौत हाल ही में हिमाचल प्रदेश के मंडी से लोकसभा चुनाव जीती हैं। अपनी इस जीत को लेकर कंगना काफी खुश हैं।

शर्मिन को ट्रोल करने वालों पर ऋचा का गुस्सा फूटा

संजय लीला भंसाली का शो हीरामंडी लगातार सुर्खियों में बना है। मनीषा कोइराला, सोनाक्षी सिन्हा, अदिति राव हैदरी, ऋचा चड्ढा, शर्मिन सेगल और संजीदा शेख स्टारर यह शो 1 मई को रिलीज हुआ था। इस शो में संजय लीला भंसाली की भांजी शर्मिन सेगल ने आलमजेब का लीड रोल निभाया। हालांकि शो में आलमजेब की एक्टिंग और एक्सप्रेशंस की जमकर खिल्ली उड़ाई जा रही है। केवल इतना ही नहीं हीरामंडी रिलीज होने के बाद एक्ट्रेस शर्मिन को सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल किया गया।

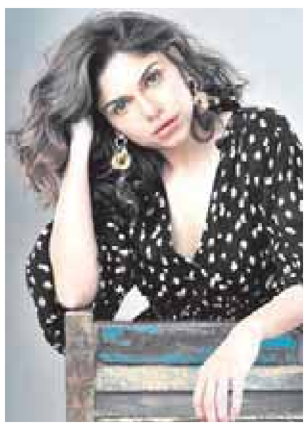

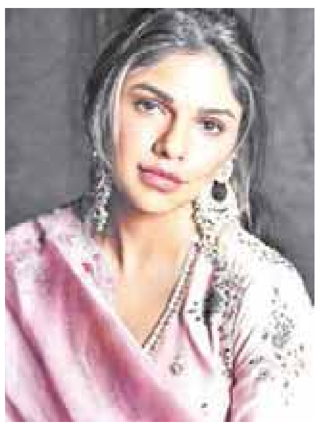

अब एक्ट्रेस ऋचा चड्ढा शर्मिन सेगल के सपोर्ट में उतरी हैं। ऋचा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से पोस्ट शेयर कर शर्मिन को ट्रोल करने वाले लोगों को खूब लताड़ा। ऋचा चड्ढा के एक फैन ने एक्ट्रेस को सलाह देते हुए कहा था कि अब उस शो पर दोबारा मत जाना। यह शो खास तौर पर इमोशनल नेपो किड के लिए बना है। फैन द्वारा शर्मिन सहगल को ट्रोल करने पर एक्ट्रेस ऋचा चड्ढा भड़क गईं। उन्होंने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर ट्रोलर्स को फटकार लगाते हुए लिखा कि पिछले महीने से मैं अपने को-स्टार के बारे में नेगेटिव टिप्पणियों को हटा रही हूं, जो मेरे कमेंट्स में दिखाई दे रहे हैं। दोस्तों रचनात्मक आलोचना ठीक है, लेकिन इतनी गहरी नफरत!

ऋचा चड्ढा ने आगे लिखा कि यह एक बात है किसी की परफॉर्मेंस को रिजेक्ट करना, ठीक है। मत करो पसंद। आपका हक है। पर ऐसे चटकारे लेकर ट्रोल तो मत करो। एक्ट्रेस ने आगे कहा कि मैं जानती हूं किसी ट्रेंड पर कूद पड़ना लुभावना होता है, लेकिन किसी अन्य इंसान को क्लिकबेट बनाना सही नहीं है। मुझे लगता है कि हम सब उससे बेहतर कर सकते हैं, उससे बेहतर बन सकते हैं। कृपया दयालु बनें। यह किसी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अभी-अभी एक बड़ा चुनाव हुआ है, हीट वेब चल रही है, दुनिया में बहुत कुछ चल रहा है, कृपया आगे बढ़ें! एक्ट्रेस ऋचा चड्ढा के इस पोस्ट पर लोग खूब कमेंट कर रहे हैं और अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। हीरामंडी शो में ऋचा चड्ढा का रोल काफी सीमित है। वह 2-3 एपिसोड के बाद मर जाती हैं।

रियल बॉक्स

आधी-अधूरी फिल्मों की दास्तान भी बेहद दिलचस्प

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

संजय लीला भंसाली अपनी नई वेब सीरीज 'हीरा मंडी' को लेकर चर्चा में हैं। क्योंकि, ये उनका 14 साल पुराना अधूरा ख्वाब था, जो पूरा हुआ। अब वे अपनी एक और रुकी हुई फिल्म इंशाअल्लाह को लेकर ख़बरों में हैं। ये फिल्म हम दिल दे चुके सनम के बाद वे सलमान खान को लेकर बनाने वाले थे। पर, फिल्म नहीं बन सकी। अब फिर इंशाअल्लाह बनने की ख़बरें सुनाई देने लगी। सिर्फ यही फिल्म नहीं जो घोषणा के बाद बरसों से नहीं बनी। ऐसी सैकड़ों फ़िल्में हैं, जिनकी घोषणा तो शोर-शराबे के साथ होती है, पर वे कभी पूरी नहीं हो पाती। इसके पीछे कई कारण है। वैसे तो फिल्म इंडस्ट्री हमेशा ही दर्शकों की पसंद के मनोरंजन का ख़्याल रखती आई है। निर्माता-निर्देशक हमेशा कोशिश करते हैं कि वे ऐसी फ़िल्में बनाएं जिन्हें लोग याद रखें और जो उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बनें! हर फिल्म के पीछे राइटर, डायरेक्टर, प्रोड्यूसर, टेक्नीशियन, एक्टर्स जैसे तमाम लोगों की मेहनत और काबिलियत लगती है! लेकिन, इन तमाम चीज़ों के बाद भी कभी कुछ फ़िल्में आधी, तो कुछ पूरी बनकर भी परदे पर जगह नहीं बना पाती!

जितनी फ़िल्में हर साल परदे पर दिखाई देती हैं, उससे करीब दोगुनी फ़िल्में परदे तक पहुंच ही नहीं पाती! कुछ फ़िल्में सिर्फ घोषणा और मुहूर्त तक सीमित हो जाती हैं तो कुछ फ़िल्में पूरी बन भी नहीं पाती। कुछ फ़िल्में बनकर तैयार हो गई, पर उनकी रिलीज में अड़ंगा आ गया। सवाल उठता है कि जब फिल्म की प्लानिंग के बाद उसकी घोषणा की जाती है, तब सारे हालात का अंदाजा क्यों नहीं लगाया जाता! दरअसल, ये सब किया भी जाता है, पर कई बार ऐसी अनपेक्षित स्थितियां निर्मित हो जाती है जिसका सीधा असर फिल्म निर्माण पर पड़ता है। मज़बूरी में निर्माता-निर्देशक को पीछे हटना पड़ता है! जरूरी नहीं कि जो हालात उभरे वो सार्वजनिक किए जाएं! क्योंकि, कुछ हालात सभी को बताने के लिए नहीं, बल्कि समझने के लिए होते हैं। सभी डायरेक्टर, प्रोड्यूसर जब कोई फिल्म बनाते हैं, तो उनकी कोशिश होती है कि उनकी फिल्म जल्द से जल्द सिनेमा के परदे तक पहुंचे, इसलिए कि फिल्म के साथ उनकी बहुत सारी उम्मीदें जुड़ी होती है। अब जरा उन फिल्मों के बारे में सोचिए जिन्हें इतनी मेहनत से बनाया जाता है, पर वे फिल्म कई कारणों से सिनेमाघरों तक नहीं पहुंच पाती। बहुत सी ऐसी फिल्में हैं, जो बनी, पर लेकिन कभी दर्शकों तक पहुंच नहीं पाई।

फिल्मों के हमेशा के लिए डिब्बा बंद के ढेर सारे कारणों के साथ एक यह भी है कि जब किसी कलाकार की फ़िल्में लगातार फ्लॉप होने लगती है, तो फिल्मकार उस पर दांव लगाने से बचते हैं! ऐसी स्थिति में पहले से घोषित फिल्मों को किसी न किसी बहाने टाल दिया जाता है। इसका सबसे सटीक उदाहरण तब सामने आया, जब आमिर खान की लाल सिंह चड्ढा फ्लॉप हुई तो टी-सीरीज के फाउंडर गुलशन कुमार की बायोपिक फिल्म मुग़ल टल गई! यही स्थिति अक्षय कुमार के साथ सम्राट पृथ्वीराज और रक्षाबंधन के फ्लॉप होने के बाद दिखाई दी। गोरखा और कठपुतली समेत कई फिल्मों को रोक दिया गया। ये हाल की घटनाएं जरूर है, पर इसका एक लम्बा इतिहास है। जब अमिताभ बच्चन का ख़राब समय था, तब उनकी कई फिल्मों को किसी न किसी कारण से रोक दिया या आगे बढ़ा दिया था। इनमें कुछ बनी, तो कुछ हमेशा के लिए भुला दी गई। अमिताभ को लेकर सुभाष घई देवा बना रहे थे। फिल्म की एक हफ्ते की शूटिंग भी हो गई थी। लेकिन, सुभाष घई और अमिताभ बच्चन के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई और फिल्म बंद हो गई। अमिताभ के साथ रेखा की पहली फिल्म अपने-पराए भी शुरू हुई थी, पर पूरी नहीं हो पाई। फिल्म बनाने वालों ने पैसों की कमी का हवाला देते हुए बंद कर दिया। अमिताभ को लेकर शूजित सरकार शूबाइट बनाई। लेकिन यू-टीवी और डिज़्नी में विवाद की वजह से ये फिल्म रिलीज नहीं हो सकी।

इन सारे स्वाभाविक और अस्वाभाविक कारणों के अलावा एक और बड़ा कारण होता है कलाकारों, निर्देशक या फिल्म की कहानी का कोई विवाद! देखा गया कि सबसे ज्यादा इसे लेकर ही फ़िल्में बनने से रुकी या रुकवा दी गई! संजय लीला भंसाली की फिल्म इंशा अल्लाह का किस्सा भी कुछ ऐसा ही है। यह फिल्म शुरू होने से पहले ही बंद हो गई। इस फिल्म में संजय लीला का मूड सलमान खान और आलिया भट्ट को कास्ट करने का था। लेकिन, सलमान के साथ क्रिएटिव डिफरेंस के कारण फिल्म की शूटिंग भी शुरू नहीं हो सकी। बाद में संजय लीला ने रितिक रोशन को कास्ट करना चाहा, पर उन्होंने भी इंकार कर दिया। आलिया को पहले ही वे पहले ही कास्ट कर चुके थे, इसलिए आलिया को लेकर गंगूबाई काठियावाड़ी बनाई गई।

1992 में बनना शुरू हुई शेखर कपूर की फिल्म टाइम मशीन में आमिर खान, रवीना टंडन, रेखा और नसीरुद्दीन शाह को लिया गया था। फिल्म लगभग पूरी बन गई थी। लेकिन, अचानक शेखर कपूर के सामने पैसों का संकट आ गया और फिल्म का बनना थम गया। मुन्नाभाई एमबीबीएस और लगे रहो मुन्नाभाई जैसी सफल फिल्मों के बाद विधु विनोद चोपड़ा ने मुन्ना भाई सीरीज की तीसरी फिल्म मुन्ना भाई चले अमेरिका बनाने की घोषणा की थी। फिल्म की थोड़ी शूटिंग भी हुई, पर संजय दत्त के जेल जाने के बाद फिल्म कहां चली गई पता ही नहीं चला! करण जौहर की दो फिल्म तख्त और शुद्धि भी अनिश्चितकाल के लिए बंद हुई है। तख्त पीरियड फिल्म थी, जिसमें रणवीर सिंह, करीना कपूर, विक्की कौशल, आलिया भट्ट, जाह्नवी कपूर, भूमि पेडनेकर और अनिल कपूर को कास्ट किया गया था। इसकी शूटिंग 2020 में शुरू की गई, पर कोविड के कारण इसे टाल दिया गया।

शुद्धि को करण जौहर करीना कपूर और रितिक रोशन को लेकर बनना चाहते थे, पर कुछ वजहों से उन्होंने इस फिल्म को वरुण धवन और आलिया भट्ट के साथ बनाने का फैसला किया, पर ये फिल्म भी नहीं बनी। करण जौहर की ही दोस्ताना 2 का भी यही हश्र हुआ। फिल्म में कार्तिक आर्यन को लिया गया। लेकिन, किन्हीं कारणों से करण जौहर ने कार्तिक को फिल्म से बाहर कर दिया। इसके बाद सोशल मीडिया पर उनकी जबरदस्त खिंचाई हुई। इस वजह से करण ने चुपचाप फिल्म को बंद ही कर दिया। एक पुराना उदाहरण दिलीप कुमार का भी है। 1991 में दिलीप कुमार को लेकर सुधाकर बोकाडे ने कलिंगा की घोषणा की थी! इसका निर्देशन भी दिलीप कुमार ही करने वाली थे। फिल्म में दिलीप कुमार के साथ सनी देओल, मीनाक्षी शेषाद्री, राज किरण, शिल्पा शिरोडकर भी कलाकार थे। फिल्म तीन साल में 90 प्रतिशत तो बन गई, पर उसके बाद डिब्बा बंद हो गई!

विद्या बालन के साथ अक्षय कुमार को लेकर चांद भाई बनाए जाने की घोषणा की गई थी। ये फिल्म ऐसे बेसहारा गरीब लड़के की कहानी थी, जो गैंगस्टर बनना चाहता है। बिना गाने की ये फिल्म रॉबिनहुड जैसे किरदार को ध्यान में रखकर लिखी गई थी। इसका निर्देशन निखिल आडवाणी करने वाले थे। लेकिन, अचानक कुछ ऐसा हुआ कि निखिल आडवाणी ने फिल्म न बनाने का ऐलान कर दिया। आजतक इसका कारण सामने नहीं आया। क्योंकि, अक्षय और विद्या ने इस मुद्दे पर खामोशी ही बरती। अक्षय और विद्या की ही फिल्म राहगीर भी मुहूर्त के बाद नहीं बन सकी। इसे प्रीतिश नंदी बनाने वाले थे और निर्देशन था रितुपर्णो घोष का। इसे देवानंद की 1965 की सुपरहिट फिल्म गाइड का रीमेक कहा जा रहा था। जब देवानंद को यह बात पता चली, तो वे नाराज हो गए। वे किसी भी क्लासिक फिल्म का रीमेक बनाने के पक्ष में नहीं थे। देव आनंद की आपत्ति के बाद विवाद बढ़ता गया और फिल्म बंद हो गई।

इसी तरह 1983 में बनी चोर मंडली राज कपूर के आखिर दिनों की फिल्म मानी जाती है। इसमें उन्होंने खुद बतौर एक्टर काम किया था। फिल्म में अशोक कुमार भी थे। फिल्म में इन दोनों ने ऐसे चोरों की भूमिका निभाई थी, जो डायमंड चुराने के पीछे पड़े रहते थे। यह फिल्म भी बनकर पूरी हो गई थी, पर कभी सिनेमाघर तक नहीं पहुंची! संजय दत्त और सलमान खान को लेकर मुकुल आनंद ने 1996 में दस बनाने की घोषणा की। मुहूर्त के बाद फिल्म की शूटिंग भी शुरू कर दी गई थी, लेकिन अचानक मुकुल आनंद की मौत ने फिल्म को हमेशा के लिए ठंडे बस्ते भेज दिया। यही स्थिति दिव्या भारती की मौत के कारण भी हुई। अक्षय कुमार के साथ पार्थो घोष दिव्या को लेकर परिणाम बनाने वाले थे। इसमें डैनी और प्राण को भी साइन किया गया था।

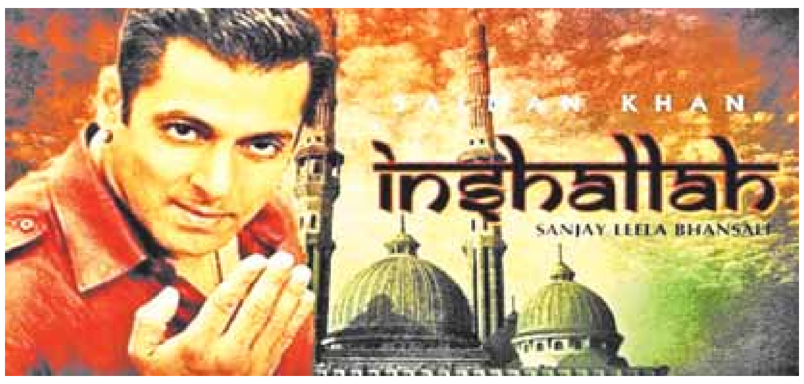

लेकिन, 1993 में दिव्या भारती की अचानक हुई मौत ने सब कुछ रोक दिया। 2009 में रिलीज हुई फिल्म ब्लू में अक्षय कुमार के साथ संजय दत्त, जायद खान, लारा दत्ता थे। फिल्म की रिलीज से पहले इसके सीक्वल की तैयारी थी, जिसका नाम आसमान तय किया गया था। लेकिन, ब्लू कमाई नहीं कर पाई और मामला अटकता चला गया और फिल्म बंद हो गई।

अक्षय कुमार की सामना उसकी कहानी की उलझन के कारण नहीं बनी। इसे राजकुमार संतोषी बनाने वाले थे। ये धर्म और राजनीति के किसी विषय पर आधारित थी। इसमें अक्षय कुमार के साथ नाना पाटेकर, अजय देवगन, रितेश देशमुख, उर्मिला मातोंडकर और महिमा चौधरी को साइन किया गया था। इसी तरह राजा कृष्णा मेनन दिवंगत बॉक्सर डिंको सिंह की बायोपिक बनाने वाले थे। इसमें वे शाहिद कपूर को लीड में लेना चाहते थे। लेकिन, इस फिल्म को भी टाल दिया गया। अनुराग कश्यप गुलाब जामुन अभिषेक बच्चन और ऐश्वर्या राय को लेकर बनाना चाहते थे। पर, फिल्म की शूटिंग तक शुरू नहीं हो सकी। 1997 में प्रोड्यूसर आशीष बलराम नागपाल ने जिगरबाज को डायरेक्ट करने के लिए रॉबिन बनर्जी को चुना था। अक्षय कुमार के साथ जैकी श्रॉफ, मनीषा कोइराला, ममता कुलकर्णी, अमरीश पुरी और बिंदु थे। पर, पूरी बनकर भी फिल्म रिलीज नहीं पाई।

अक्षय की ही 1997 में पूरब की लैला-पश्चिम का छैला घोषित हुई थी। उनके साथ सुनील शेट्टी और नम्रता शिरोडकर थे। अचानक हीरोइन नम्रता ने साउथ के हीरो महेश बाबू से शादी कर ली और फिल्म अटक गई। 12 साल बाद अक्षय ने नए नाम हैलू इंडिया के साथ फिल्म पूरी की, पर इसने सिनेमाघर का मुंह नहीं देखा। इसी तरह सुशांत सिंह राजपूत की फिल्म पानी का काफी हल्ला था। शेखर कपूर के निर्देशन में बनने वाली इस फिल्म के लिए सुशांत सिंह ने काफी तैयारी की थी। लेकिन, शेखर कपूर का प्रोड्यूसर आदित्य चोपड़ा से किसी बात को लेकर विवाद हुआ और फिल्म बनने से पहले ही ठंडे बस्ते में चली गई। दरअसल, ये सिर्फ उन चंद फिल्मों के नाम और घटनाक्रम हैं, जो सामने आए! ऐसी फिल्मों की संख्या रिलीज हुई फिल्मों से बहुत ज्यादा है। ये सब आगे भी चलता रहेगा, क्योंकि फिल्म इंडस्ट्री का नाम ही अनिश्चितताओं से जुड़ा है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सिनेमा में वादे निभाने और तोड़ने के कई बहाने

अशोक जोशी

वादा करना और निभाना या फिर उसे तोड़ देना जीवन का हिस्सा है। कई बार व्यक्ति वादा निभाना तो चाहता है, पर हालात के कारण ये संभव नहीं हो पाता। वादे सिर्फ निजी जीवन में ही किए या निभाए नहीं

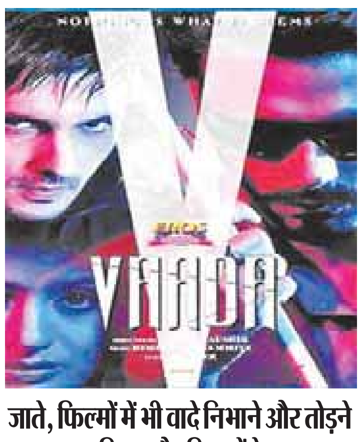

जाते, फिल्मों में भी वादे निभाने और तोड़ने का लम्बा इतिहास है। फिल्मों के कथानक के साथ फ़िल्मी गीतों में भी वादों की फसलें खूब लहलहाती रहती है। नायक और खलनायक से लगाकर चरित्र अभिनेता और अभिनेत्रियां फिल्म दर फिल्म वादे करती है और इसके निभाने या न निभाने के घटनाक्रम से फिल्म आगे बढ़ती जाती है।

लोकसभा के चुनाव से पहले राजनीतिक पार्टियों ने मतदाताओं से जो वादे किए थे, चुनाव के परिणाम आने के बाद वह अमूमन टूटते दिखाई देते हैं। पांच जून को यह बात तब साबित हो गई जब लखनऊ और बेंगलुरु सहित देश के कई स्थानों पर कांग्रेस कार्यालय पर जमा महिला मतदाताओं की भीड़ साढे आठ हजार की आस लिए घंटों धूप में खड़ी रही। उनकी आस शाम होते होते धूमिल होने लगी। विपक्ष ने उन्हें साल में एक लाख रुपए देने का जो वादा किया था वह सपना ही बनकर रह गया।

विपक्ष की बात क्यों? सत्तारूढ़ पार्टी ने भी मतदान से पहले जो बढ़-चढ़कर वादे किए थे,गठबंधन सरकार के बनने के बाद उनके पूरे होने की संभावना भी दूर दूर तक दिखाई नहीं देती। चाहे यूसीसी हो, मुस्लिम आरक्षण हटाना हो या इसी तरह के दर्जनों वादे सत्तारूढ पार्टी निभाएगी इसमें शक है। ऐसे में मतदाता तो सवाल करेगा ही क्या हुआ तेरा वादा? लेकिन जहां तक वादे की बात है वह केवल राजनीति या सामाजिक जीवन में ही नहीं किए जाते सिनेमा में भी वादों की फसलें खूब लहलहाती रहती है। सिल्वर स्क्रीन पर नायक, खलनायक से लेकर चरित्र अभिनेता और अभिनेत्रियां फिल्म दर फिल्म वादे करती है और इसके निभाने या न निभाने के घटनाक्रम से रील दर रील फिल्म आगे खिसकती रहती है।

फिल्मों के घटनाक्रम में वादों का सिलसिला कभी फिल्म के आरंभ में ही शुरू हो जाता है, जब एक दोस्त मरते-मरते अपने दूसरे दोस्त के नाम अपने बेटे या बेटी हाथ सौंपकर वादा लेता है कि उसके बाद वह बच्चों की देखभाल करेगा। इधर दोस्त वादा देने वाला दोस्त वादा करता है, उधर वादा लेने वाले दोस्त की गर्दन लुढ़क जाती है। इसी तरह का वायदा एक मां दूसरी मां से लेती है और वादा देने वाली मॉ 16 रील की फिल्म में बेटे या बेटी से उसकी सौतेली मां होने की बात छुपाती है। फिल्म की आखिरी रील में अपना वादा तोडकर रहस्योदघाटन करती है कि वह सौतेली मां है। यह बात अलग है कि पहली पंक्ति में बैठे दर्शक से लेकर आखिरी पंक्ति में बैठा हर एक दर्शक इस हकीकत से वाकिफ रहता है।

फिल्मों के विलेन का काम ही वादा करना और तोडना होता है। वह कभी भी किसी को भी वायदा देकर फायदा उठा सकता है और वादाखिलाफी कर नायक या नायिका को सड़क पर ला सकता है या नायक की बहन से शादी का वादा कर उसे गर्भवती बनाकर छोड़ सकता है। तब नायक अपनी बहन से वादा कर फिल्म की कहानी को आगे बढाता है । इस बीच कई ऐसे मौके आते हैं जब नायक की बहन अचानक उस समय पर्दे पर आती है जब नायक दुष्ट खलनायक को मारने ही वाला होता है। उसके सीने पर लौटकर नायक की बहन अपने भाई से वायदा लेती है कि वह अपने बहनोई की जान बख्श देगा क्योंकि वह जानती है कि इसके बाद ही खलनायक पश्चाताप करता हुआ नायक की बहन को अपना लेगा।

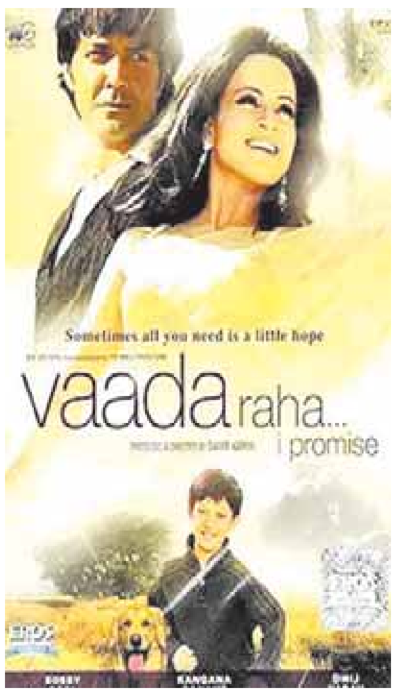

फिल्म का नायक भी वादा करने में पीछे नहीं रहता। वह शहर से गांव आता है। नायिका से प्रेम करता है और किसी काम से जब उसे शहर जाना पड़ता है तो नायिका से वादा करता है कि वह जल्द ही लौटेगा लेकिन कभी मां बाप के दबाव में तो कभी याददाश्त चले जाने पर अपना वादा नहीं निभाता, तब नायिका उसे खोजने शहर आती है और नायक को उसका वायदा याद दिलाती है। अक्सर यह फिल्म के क्लाइमेक्स में होता है। नायिका को भी मजबूरी में अपने मरते या रिवाल्वर हाथ में लिए मरने की धमकी देने वाले बाप को वादा करती है कि आज के बाद वह नायक से नहीं मिलेगी।

फिल्मों में कोरे वायदे ही नहीं निभाए जाते। इन वादों के साथ कभी रघुकुल रीत सदा चली आयी, प्राण जाए पर वचन न जाई जैसे डायलॉग सुनने को मिलते हैं। वादा देने और निभाने के लिए जो गीत बने हैं उनमें जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा, वादा तेरा वादा, वादे की शाम है वादा निभाना, ये वादा करो चाँद के सामने, वादा करो नहीं छोडोगी तुम मेरा साथ, कस्मे वादे निभाएंगे हम, कसमे वादे प्यार वफा सब बाते हैं बातों का क्या, वादा न तोड़, वादा कर ले साजना, वादा करो जानम, तुम अगर साथ देने का वादा करो, क्या हुआ तेरा वादा और वादा रहा सनम दर्शकों को वादे की महिमा सुनाते रहते हैं। वादा एक अचूक फिल्मी नुस्खा है जिसके दम पर दर्शकों को आकर्षित किया जाता रहा है। इसी वादे की खातिर ये वादा रहा, वादा, क्या हुआ तेरा वादा, कस्मे वादे, वचन और प्राण जाए पर वचन न जाए जैसे टाइटल रखे गए है।

योगी भी ना जाने... (आ) योग की माया !

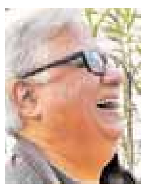

प्रकाश पुरोहित

बुरी बात है कि कोई अच्छा काम कर रहा है और आपको समझ नहीं आ रहा है तो उसकी बुराई कर रहे हैं। पुलिस का तो पता ही है कि चोरी से पहले चोर को इसलिए नहीं पकड़ती है कि फिर लोगों को कैसे पता लगेगा कि चोर क्या और चोरी कैसे होती है। कान को पकड़ने के कई तरीके हो सकते हैं, पारंपरिक तरीका ही अपनाया जाए, यह तो कोई जरूरी नहीं। कुछ लोग हाथ को गर्दन के पीछे से ले जाकर कान पकड़ते हैं। हो सकता है, आपको नजर नहीं आ रहा हो, मगर कान तो हाथ में है ना! हाथ का मकसद कान पकड़ना ही है, फिर कोई चाहे जैसे और किसी के भी पकड़े!

इस बार अनंतकाल से चले आ रहे चुनाव प्रचार के दौरान कितनी बार विरोधी दलों ने छाती कूटी होगी कि चुनाव आयोग का घुटना सरकार के पेट की तरफ झुका जा रहा है। बात-बात पर आयोग को कोसा जा रहा था कि कुछ कर नहीं रहा है। जब सरकारी दल की तरफ से धड़ल्ले से मनचाहा बोला जा रहा था तो टीएन शेषन को याद कर रहे थे विरोधी दल कि वे होते तो ये हो जाता, वो हो जाता। हर वक्त की अपनी जरूरत होती है, यह बात राजनीतिक दल नहीं समझते, लेकिन आयोग पर तो जिम्मेदारी होती है और पूरी ईमानदारी से समझते हैं।

बताइए, अगर आज शेषन साहब होते तो क्या होता! क्या सत्ता दल के नेता मन की बात वैसे बोल सकते थे, जैसा कि हमने पिछले छह हफ्तों में सुना? कहते हैं न, बंदर की हकीकत देखनी है तो उसे ऊपर चढ़ने दो, साफ नजर आने लगती है। मराठी के अश्लील मुहावरे का यह ढंका हुआ भावार्थ है। कल्पना कीजिए, जब मंगलसूत्र पर खतरे से प्रधान सेवक आगाह कर रहे थे, तभी अगर आयोग सख्ती से काम लेता और 'हमारे परम् आदरणीय और यशस्वी प्रधानमंत्री' से अपना हर वाक्य शुरू करने वाले अध्यक्ष को नोटिस थमाने के बजाय प्रधान सेवक को चुनाव प्रचार से दूर कर देता तो देश की मासूम और अज्ञानी

जनता म, म, म, म, के बाकी भेद जान पाती क्या? क्या देश को यह पता चलता कि रिचर्ड एटनबरो अगर गांधी फिल्म नहीं बनाते तो अक्खी दुनिया यह जान ही नहीं पाती कि मोहनदास करमचंद गांधी कौन...! क्या यह पता चलता कि यूक्रेन और रूस को एक फोन से डर कर कुछ घंटों के लिए युद्ध तक रोक देना पड़ा था?

चूंकि हम पौराणिक नमूनों से बात बेहतर ढंग से समझते हैं और समझाते हैं तो पेश है... अगर कृष्ण से हर बार बदतमीजी, बदजुबानी और बददिमागी करने वाले शिशुपाल को ठीक, हमारे आज के ईमानदार और निष्पक्ष आयोग की ही तरह, अगर कृष्ण हर बार टोकते तो उसके अपराधों का शतक तो कभी पूरा ही नहीं होता। वह तो अजर-अमर हो जाता, इसीलिए कृष्ण हर बार मुस्करा देते थे और शिशुपाल को याद नहीं दिलाते थे कि उसका स्कोर कितना हो गया है। धैर्य हमेशा फलदायी होता है। शिशुपाल के शतक का पता तभी लगा, जब कृष्ण का सुदर्शन चला। ठीक वैसे ही, जैसे चार जून को इवीएम के खुलने पर विजयी-सर्वे के धुर्रे बिखर गए!

चुनाव आयोग चाहता तो पहली बार में ही सख्ती से रोक देता कि आप आचार संहिता का अचार बना रहे हैं, लेकिन जब शुरू में नहीं रोका गया तो दूसरी बार और ज्यादा मुखर होने की हिम्मत आ गई और कहा जाने लगा कि कांग्रेस सरकार आई तो कितना जुल्म बहुसंख्यक पर होगा और कितना भला, उन अल्पसंख्यकों का होगा, जो सत्तर साल में सरकारी फायदों के बावजूद गरीब हैं, बेरोजगार हैं और कम पढ़े-लिखे हैं और अब तो आबादी भी ज्यादा नहीं बढ़ा रहे हैं और चार-चार शादियां भी नहीं कर रहे हैं। बताया गया कि विरोधी दल तो सत्ता में सिर्फ इसी एक ही मकसद के लिए आ रहे हैं, बाकी तो उन्हें कोई काम नहीं है। आयोग अगर सरकार की बधाई ले रहा था तो विरोधी दलों की जली-कटी भी सुन रहा था, जबकि बेचारा आयोग तो विपक्ष की ही मदद कर रहा था।

आज जब हम बदले नतीजों की बात कर रहे हैं और अपनी पीठ पर खुद ही धौल जमा रहे हैं तो इसका पूरा श्रेय गांधारी-आयोग को है। कायदे से तो विरोधी दलों को तारीफ करनी चाहिए कि आयोग ने सरकारी दल के मुंह पर लगाम नहीं लगाकर पूरे देश को यह जानने का मौका दिया कि सोच के किस पायदान पर ये गारंटी देने वाले नेता खड़े हैं। शेषन होते तो क्या देश यह जान पाता? क्या सरकारी दल के नेता इतने खुल्लम खुल्ला अपने दबे-छुपे उद्गार जाहिर करते? मुस्लिम से शुरू हुआ, मंगलसूत्र से होता हुआ मुजरा तक पहुंच सकता था भला? मन में तो किसके क्या है, यह कोई नहीं जान सकता, लेकिन आयोग दखल ना दे तो वैसे ही पता चल जाता है, जैसे नार्को टेस्ट होता है और लोग अंदर की बात भी उगलने लगते हैं।

यह क्रिकेट से बेहतर समझा जा सकता है, अंपायर मैदान में सर्वशक्तिमान होता है, लेकिन खिलाड़ी कितनी ही बदतमीजी करे, मैदान में अंपायर कुछ नहीं बोलता, चुनाव आयोग की ही तरह सुनता रहता है। इस तरह खिलाड़ी का असली रूप-रंग जग-जाहिर हो जाता है, वरना कोई यकीन ही ना करे कि ये गाली भी बक सकता है, झापड़ भी मार सकता है! फिर हम अगले दिन पढ़ते-सुनते हैं कि फलां खिलाड़ी को दो मैच के लिए बाहर कर दिया गया है या उसकी फीस का इतना हिस्सा काट लिया गया है। यह सुख और सुविधा फुटबॉल में नहीं है, वहां तो हाथोहाथ रेड कार्ड दिखा बाहर कर दिया जाता है, इसलिए क्रिकेट को कभी भद्रजनों का खेल भी कहा जाता था, कुछ अब भी कहते हैं, पर मानते नहीं। चुनाव भी तो भद्रजनों का ही खेल है, इसलिए आयोग को चाहिए कि किसी को रोके नहीं, बस, चुनाव सम्पन्न कराते रहे। चेहरे खुद-ब-खुद बेनकाब होने लगेंगे और लोग इनके असली रंग-ढंग पहचान जाएंगे।

क्या हमें पता चलता कि 'पिताजी' का जन्म, गर्भ नाल से नहीं हुआ है, सीधे ऊपर से डिलीवरी हुई है। यह भी कभी जान पाते कि धरा पर इन्हें क्यों धरा गया है, अगर ये ही ना बताते कि ईश्वर ने खुद भेजा है भारत का उद्धार करने। क्या कोई सोच सकता है कि कोई वरिष्ठ उम्मीदवार सिर्फ चुनाव जीतने के लिए किस कनिष्ठ यानी निचले स्तर तक उतर सकता है! बंदिश होने या सजा का डर हो तो व्यक्ति सोच समझ कर बोले और अपने एजेंडे छिपाए रखे। लोगों को पता ही ना चले कि इस उजली काया के अंदर कितनी स्याह माया दफन है। हमें तो कायदे से आयोग का उसी तरह सम्मान करना चाहिए, जैसे 'बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।' आयोग नहीं होता तो चार सौ पार का योग तो बन ही गया था ना! यूं समझ लीजिए, आयोग ने देश का लोकतंत्र डूबने से बचा लिया, वरना हम तो हिंदू-मुसलमान में उलझ ही गए थे ना!

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

पिता: घर की नींव जिसे हम अक्सर भूल जाते हैं

मैं एक घर कैसे बनता है आप कहेंगे ईंट पत्थरों से। जनाब यहां मैं मकान नहीं कह रही हूं पर चलिये मकान कैसे बनता है? मकान में ईंट पत्थर ग्रिल, नींव, रेत गिट्टी, प्लास्टर सब पिता की जो कभी दिखाई नहीं देती, फिर बारी आती है मकान को घर बनाने की पुताई से घर चमकाती आवाजें, रसोई, बर्तन ये मां होती है और यूं मुकम्मल होता है एक घर। हम पिता के योगदान को इसलिये भूल जाते है कि वो दिखाई नहीं देता जबकि वो घर के कण कण में उपस्थित होता है।

किसी दिन अकेले बैठ कर सिर्फ पिता के बारे में सोचना सबसे कम अपनी उपलब्धियों और ज़िम्मेदारियों के बारे में बताने वाला शख्स बड़े प्रेम से अपने फर्ज़ पूरे करता है। वो आपको डिस्टर्ब नहीं करता पर आप उसके बाहर जाते ही मस्ती के प्रोग्राम बनाते हो। कभी किसी प्रोग्राम के बीच यदि वो कहता है, चलो मैं भी चलता हूं, तुम सब चुप्पी साध लेते हो, फिर वो खुद ही कहता अरे! मैं तो मज़ाक कर रहा था। तुम क्या सोचते हो उन्हें समझ नहीं आता मां के पीछे पड़ पड़ के उन्हें आउटिंग पर ले जाते हो।

जहां तक मेरी जिंदगी की बात करूँ तो मेरे साथ उल्टा था। पापा अनुशासन पसंद तो थे पर इतवार के दिन बच्चे बन जाते थे। मेरे पढ़ने को बढ़ावा देते तो माँ घर के काम सीखने के

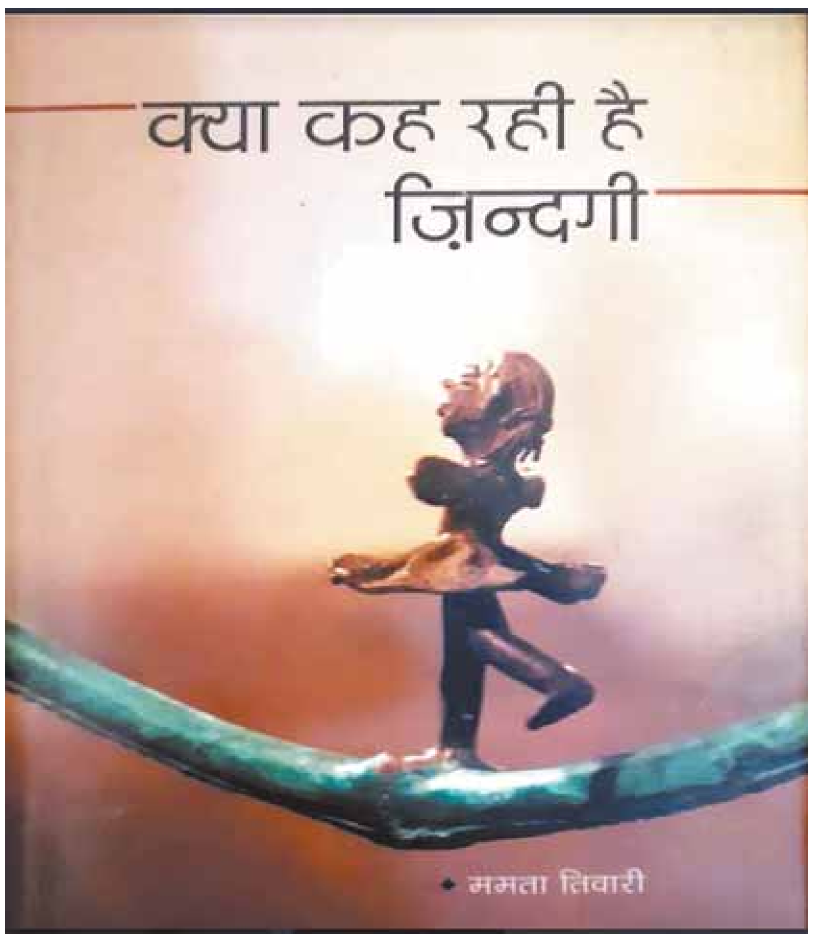

पीछे पड़ जाती। यूँ मेरी जिंदगी में बाहर और घर के काम में बैलेंस रहा इसके लिये मैं दोनों की आभारी हूँ, पर जिस साहित्य की दुनिया में विचर रही हूँ उसका श्रेय मैं पापा को ही दूँगी। किसी दिन क्यों आज ही छोटी से छोटी चीज उनकी याद करो एक मोटी किताब बन जायेंगी। हम उसी किताब के पन्ने है जिसे पिता के हार्ड कव्हर की सुरक्षा ने ढंक रखा है। और क्रेडिट हम ले लेते। आज एक विचार पर अपनी बात लिखो आज ''अगर मैं पिता की जगह होता।''

ये सच है माँ के आगे हम
पापा को ज़्यादा तवज्जोह नहीं देते
कुछ बात कहनी हो उनसे तो
माँ को आगे कर देते।
मैं जानती थी पापा
तुम थोड़ा मायूस हो जाते, कि
काश! बिटिया ये बात मुझसे खुद कहती
मेरे गले से लटक ढेर सी फर्माइश करती
आज जब बहुत दूर हो मुझसे तुम
मन ही मन तुमसे कितनी बातें करती हूँ
सपनों में कदम मिला तुम्हारे साथ चलती हूँ
तमाम चाहते आज जाग उठी
निकल गई वो बातें जो बरसों से होंठो पे रूकी
पहले तो करूँ आभार
जो तुमने दिया इतना प्यार
फिर मांगती हूँ दिल से क्षमा
कि अपने दिल से तुमको दूर रखा
खुशी से झूम जाती हूँ, जब लोग कहते है
अरे! तुम किशोर की बेटी हो ना
रूको मत, कह दो दिल की बात जल्दी
मैंने तो कहने में जरा देर कर दी
रूबरू हो पिता से आज
तो आज ही तो वो दिन है
जब तुम कह सकते हो अपनी बात
(वैसे कभी भी कह सकते हो)
कि आप बरसों से इस दिल में रहते हो
देर से ही कहा पर आज कहते है
पापा हम तुम्हें बहुत प्यार करते है।

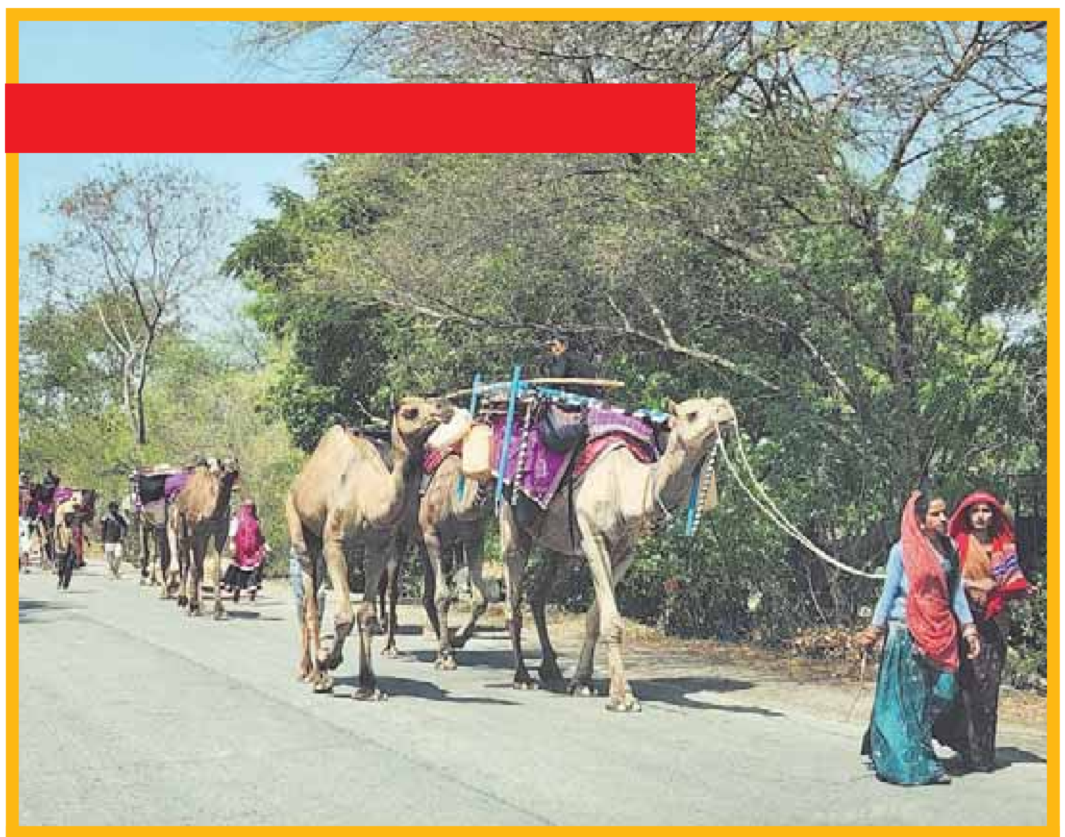

राजस्थान से मध्य प्रदेश में आए मारवाड़ी रेवाड़ी लोग अपने ऊंटों और भेड़ों के काफ़िले को लेकर यायावरी करते हुए सर्वत्र देखे जा सकते हैं । यह लोग अपने मवेशियों को पालने तथा स्वयं का पेट भरने के लिए एक स्थान पर नहीं रहते। घूमते हुए पानी की उपलब्धता से भरा अनुकूल स्थान जहां भी देखते हैं अपना आशियाना तान रात गुजार कर फिर आगे बढ़ जाते हैं।

चित्र एवं विवरण-ऋतुराज बुड़ावनवाला

//भाषान्तर//

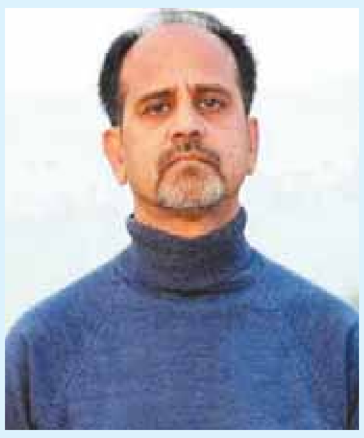

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज विश्व विख्यात लेखक ख़लील जिब्रान की दो लघु रचनाओं का अनुवाद।

जीवन और मृत्यु

(एक)

एक दिन मैंने ज़िन्दगी से कहा, मैं मृत्यु को बोलते हुए उसकी आवाज़ सुनना चाहता हूँ।

तब ज़िन्दगी ने अपनी आवाज़ बदलकर अंहकार भरे अंदाज में कहा, ÷लो, अब उसकी आवाज़ सुनो।

(दो)

हजारों साल पहले मेरे एक पड़ोसी ने मुझसे कहा - मुझे ज़िन्दगी से नफ़रत है, क्योंकि इसमें दुख के अलावा और कुछ भी नहीं।

और कल कब्रिस्तान के पास से गुजरते हुए मैंने ज़िन्दगी को उसकी कब्र पर नृत्य करते देखा।

... ताकि बच्चों को कला का साथ मिले... !

❒ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

इंग्लैंड में गरमी आती है, प्रोग्राम की बाढ़ आने लगती है। लिटरेचर फेस्टिवल अभी निपटा है और 8 और 9 जून को जेएलएफ-लंदन है। आखिर में ग्लैस्टनबरी आता है, जो सबसे बड़ा ओपन एयर म्यूजिक फेस्टिवल है। अगस्त के आखिर में एडिनबर्ग महोत्सव होता है, जो महीना भर चलने वाला है। इसी बीच कई छोटे-बड़े संगीत, डांस, फिल्म आयोजन होते हैं। स्ट्रीट आर्ट फेस्टिवल से लेकर थिएटर के शो तक हर जगह कुछ न कुछ हो रहा होता है। वैसे लंदन में साल भर कला प्रोग्राम होते रहते हैं, लेकिन गरमी की आमद पूरे देश में त्योहार की तरह मनाई जाती है और इसे मनाने का कला से बेहतर कोई दूसरा तरीका नहीं है।

थिएटर और कला के प्रोग्राम में टिकट की बिक्री बढ़ी है, लेकिन साथ ही कला के लिए सरकार के पास पैसों की कमी है। 2023 में कांसर्ट मौजूदगी में 20 फीसद और टिकटों की बिक्री में 13 फीसद की बढ़ोतरी हुई। कुछ लोग फायदे में हैं। बर्मिंघम में नगर निगम (यूके में इन्हें सिटी कौंसिल कहते हैं) के दिवालियापन का मतलब है कि स्थानीय कला संगठनों को 2026 तक इसका खामियाजा भुगतना होगा। टोरी सरकार ने जिस तरह

से हर तरफ कम बजट से शुरुआत की और महामारी के आखिरी दौर के बीच के इस लंबे दौर में पैसे की कमी से जूझ रहे कला संगठन बहुत मुश्किल दौर में हैं। इस चुनाव अभियान में दोनों खास दले आर्थिक लाभों के बावजूद इमिग्रेशन में कटौती का वादा कर रहे हैं और सहमत हैं कि यूरोपीय संघ से ब्रिटेन बाहर रहेगा। भले ही यह कुछ राजनीतिक स्वायत्तता हासिल करने के लिए जीडीपी वृद्धि का बलिदान है। इन सबका सीधा असर कला और संस्कृति के बजट पर पड़ेगा।

अपनी नई पुस्तक 'कल्चर इज नॉट एन इंडस्ट्री' में विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जस्टिन ओ कॉनर का तर्क है कि संस्कृति को स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक कल्याण और बुनियादी ढांचे के साथ रखा जाना चाहिए और सरकार को इसे बराबरी की फंडिंग देना चाहिए। कला और संस्कृति को फैलने-फूलने के लिए पैसों की सख्त जरुरत है। समाज की जीवन शैली नजदीक से देखने की जरुरत है। ऐसे ही हम इसे व्यवस्थित कर मौजूदा तरीकों की कल्पना कर सकते हैं। संस्कृति केवल महंगा तमाशा भर नहीं है, बल्कि जरुरत है, जिसकी वजह से समाज की दिशा तय होती है। ऐसा समाज जो टिकटों को महंगा बनाता है, जो बच्चों को कला से दूर करता है और जो लाइब्रेरी को पैसों की कमी के कारण बंद कर देता है। वह समाज कुछ नया करने की उम्मीदों को खत्म कर देता है और ऐसा न हो, इसके लिए जितनी कोशिशें की जाएं, कम हैं।